जून-२०१० किंमत रु. ५/-

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेवने चंदन के वाघा का दर्शन ।

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१

(१) अधिक मास में अहमदाबाद मंदिर में हिमालय दर्शन (२) अहमदाबाद मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में समूह महापूजा (३) अहमदाबाद मंदिर में अधिक मास में श्रीमद् भागवत सप्ताह के वक्ता पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा उद्‌बोधन करते हुये महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी (४) पारायण के यजमान श्री ईश्वरभाई प्रभुदास पटेल परिवार प.पू. महाराजश्री का पूजन करते हुये (५) नारायणपुरा (टर्फ स्कुल) में प.पू. महाराजश्री की उपस्थिति में रात्री पारायण करते हुये शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशसदासजी लाभ लेते हुये नारायणपुरा के अग्रगण्य सत्संगी तथा उद्योगपति श्री घनश्यामभाई (कुवा) तथा श्री नटुभाई (६) चेनपुर गाँव में प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में कथा करते हुये घनश्याम स्वामी

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ४ अंक : ३८ जून-२०१०

अ नु क्र म णि का

१. अस्मदीयम् २
२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ३
३. श्री नरनारायणदेव माहात्म्य ४
४. अन्तर्ध्यान से पूर्व इष्टदेव श्रीहरि के कल्याणकारी वचन ५
५. साष्टांग दंडवत प्रणाम क्यों ? ७
६. दिव्य संकल्प के साथ ८
७. श्रीजी महाराज द्वारा बताये गये दुःख निवृत्ति के मार्ग १०
८. आनंद की लहर ११
९. सत्संग सुरभि १२
१०. सत्संग बालवाटिका १४
११. भक्ति सुधा १७
१२. सत्संग समाचार २१

संपादकीय

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान सभी ब्रह्मांडो के कर्ता हर्ता हैं। उनकी इच्छा के विना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। ऐसे वे अपने इष्टदेव भगवान हैं। वे ही अपने पालक तथा पोषक हैं। केवल २२५ वर्ष के अन्तराल में ही विश्व के कोने-कोने में भगवान स्वामिनारायण का नाम स्मरण करने वाले आश्रितजन दिखाई देते हैं। प्रातः पूजा विधिमें हम शिक्षापत्री के कम से कम पांच श्लोक तो वांचते ही हैं। जिससे पूरे दिन उसी श्लोक का मनन एवं निदिध्यासन होता रहता है। इसीलिये जब हम कोई गलत काम करने जाते हैं तो श्लोको में महाराज की आज्ञा का स्मरण होने से गलत काम नहीं करते। छोटी सी शिक्षापत्री हमें कितना सुंदर सदाचार का पाठ पढाती है। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन बदल देती हैं। श्रीजी महाराज एक-एक श्लोक में ऐसा उद्‌बोधन किये हैं कि चाहे जैसा भी मनुष्य हो शिक्षापत्री की आज्ञा में वर्तन करेगा तो उसके जीवन में कभी दुःख नहीं आयेगा।

इस वर्ष ग्रीष्म ऋतु का मापदंड देखलिये। वैज्ञानिकों के सूत्र ग्लोबल वोर्मिंग की असरका आज हम अनुभव किये। अब भी यदि हम जागृत नहीं होंगे तो इससे भी अधिक विपरीत परिणाम आयेगा। राजस्थान के रण विस्तार में ५० फेरन हीट गरमी का नया रेकर्ड नोट किया गया। हम जागरुक नागरिक बनकर प्रदूषण फैलाने वाले तत्वों के सामने सजग रहेंगे। करीब तीन महीने से गरमी के कारण अपने देश में अनेकों लोग दिवंगत हुये हैं। यह प्रारंभ की स्थिति है। आज से २२५ वर्ष पूर्व श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री के ३२ वें श्लोक में स्पष्ट आज्ञा की है कि "अने लोक ने शास्त्र तेमणे मल-मूत्र करवाने अर्थे वर्ज्या एवा स्थानक जे जीर्ण देवालय तथा नदी, तलावना आरा तथा मार्ग तथा वावेलुं खेतर, वृक्षनी छाया तथा फूलवाडी बगीचा ए आदिक जे स्थानक तेमने विषे क्यारेय पण मल-मूत्र न करवुं तथा थुंकवुं पण नहीं।"

उपरोक्त श्लोक को सम्पूर्ण विश्व यदि अपने जीवन में उतारे तो विना ए.सी. तथा पंखा के विना आराम से रह सकता है। किसी डाक्टर की भी जरुरत नही पड़े। दूसरे की वात को छोड़कर हमारे जितने भी सत्संगी है वे शिक्षापत्री के ३२ वें श्लोक का अवश्य पालन करें। आगामी वर्ष श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्‌घाटन महोत्सव के प्रचार-प्रसार में मनाना है। जिस महोत्सव में सभी को समर्पित होकर, कटिबद्ध होकर सहयोग देने के लिये स्वयं तथा अन्यों को भी प्रेरित करें। ऐसी श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणों में प्रार्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१०)

२. नरनारायण कोर्पोरेशन में पदार्पण कणभा के पास बालासिनोर
सत्संग शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।
नारायणपुरा (टर्फ स्कूल) पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

३. अधिकमास के निमित्त नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
माणसा गाँव में एक हरिभक्त के यहाँ पदार्पण।

४. कुंडल गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

५-६. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीरागढ (मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

६. से ११. श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड (अमेरिका) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर झूलासण पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१४. से. २३. श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) नूतन मंदिर पाटोत्सव पारायण यज्ञ, समूह महापूजा तथा ठाकुरजी का महाभिषेक इत्यादि कार्यक्रम अपने सानिध्य में धूमधाम से सम्पन्न किये।

२४. हाथ पालिया (पंचमहाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी (पूराना मंदिर) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा (ता. ईडर) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री महेन्द्रभाई शीवाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण नरोडा रोड।

२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर पुराना अरोडा (ईडर देश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२८. से ३०. नारायणघाट (कच्छ) पदार्पण।

३१. सैजीपुरा (हिंमतनगर) पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
घाटलोडिया पदार्पण।
धोलका पाटोत्सव के पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० • शृंगार आरती ८-०५

• राजभोग आरती १०-१० • संध्या आरती १९-३० • शयन आरती २०-३०

श्री नरनारायणदेव माहात्म्य

- शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी गुरु महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (अमदावाद)

यह विशाल भारत खंड है । यह विशाल भारत खंड अजनाभिखंड भी कहा जाता है । नव खंडो में यह सर्वोत्तम तथा आध्यात्मिकता का खजाना कहा गया है । भरत राजा के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा । भरत खंड देश में भगवान तथा सत्पुरुषों का अवतार हुआ । इस भरत खंड के राजा कौन ? इस खंड की अनंत महिमा है । इस भारत खंड के राजाधिराज स्वयं भगवान नरनारायण हैं । इस धरती पर इनके असंख्य अवतार हुये हैं । इनका परिचय विविधशास्त्रो में अनेक प्रकार से वर्णित है ।

नर तथा नारायण स्थूल दृष्टि से दो स्वरुप अलग-अलग दिखाई देते हैं। परंतु आध्यात्मिक दृष्टि से वे अलग नहीं हैं । वे दोनो एक ही हैं ।

भक्ति चिंतामणी में निष्कुलानंद स्वामीने बताया है कि -

"छो तो एक ने दिशो छो दोय ।
तेनो भेद जाणे जन कोय ॥"

हे प्रभु ! आप तो एक ही हैं, फिर भी दो रुप में दर्शन देते हैं। इस का भेद कोई जान नहीं सकता । अथवा इसका भेद भाग्य से कोई जान सकता है ।

नारायण देव की जब वंदना की जाती है तब संस्कृत में उन्हें नरनारायणाय नमः ऐसा बोला जाता है, परंतु नरनारायणाभ्यां नमः ऐसा नहीं बोला जाता । लक्ष्मी तथा नारायण ए दोनो स्वरुप अलग-अलग है, इसलिये इन्हे द्विवचन में बोला जाता है । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । नरनारायण दो स्वरुप में दिखाई देते हैं, लेकिन शास्त्रो में नरनारायणदेव के लिये एक वचन का प्रयोग मिलता है । नरनारायणाय नमः ।

धर्म तथा मूर्ति देवी से भगवान चार रुप में प्रगट हुये । चारो स्वरुप मिलकर एक रुप में हैं । भक्तों के मनोरथ को सिद्ध करने के लिये रुप धारण करते हैं । एक होते हुये अनेक रुप में अनेक होते हुये एक रुप में अपनी योग कला से रह सकते हैं । यह वात अक्षर पर्यन्त किसी को समझ में नहीं आसकती है ।(हरिचरित्रामृत सागर)

नर तथा नारायण देनी स्वरुप अलग-अलग दिखाई देते हैं । यही तो भगवान की लीला है । भगवान की यही इच्छा है। इसलिये वे अलग-अलग दिखाई देते हैं । परंतु वे दोनो स्वरुप एक ही है । नरनारायण भगवान तो इस धरती पर अनेकों बार अवतार धारण किये है । दोनो स्वरुप में नर अर्जुन के रुप में अवतरित हुये है । यह वात शिक्षापत्री के ११० वे श्लोक से प्रमाणित होती है -

ज्ञेयोऽर्जुनेन युक्तौऽसौ नरनारायणाभिधौः ।
बलभद्रादियोगेन तत्तन्नामोच्यते स च ॥

श्रीकृष्ण भगवान के साथ जब अर्जुन (नर) रहें तब नरनारयण यह नाम समझना चाहिये । श्रीकृष्ण जब राधा के साथ रहे तव राधाकृष्ण समझना चाहिये । जब लक्ष्मी के साथ युक्त रहे तब लक्ष्मीनारायण समझना चाहिये । परंतु स्वामिनारायण भगवान कहते हैं कि राधादि से युक्त कभी भगवान रहते हैं । लेकिन लक्ष्मीजी, राधाजी, अर्जुन ए सभी तो भगवान के भक्त है । अर्जुन कोई नर नहीं है ऐसा महाभारत में मिलता है ।

"अर्जुनस्तु नरावेश श्रीकृष्णस्तु भगवान स्वयम् । अर्जुन में नर का आवेश था जब कि श्रीकृष्ण स्वयं भगवान थे ।"
(क्रमशः)

अन्तर्ध्यान से पूर्व इष्टदेव श्रीहरि के कल्याणकारी वचन

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

परिवार में जो बड़ा होता है वह पूरे जीवन अपने आश्रित कुटुंबीजन को अधिक सुखी होने के लिये अपने ज्ञान का निचोडरुपी हितोपदेश सुनाता रहता है। इतना नहीं जब उसके अंतिम समय होते हैं उस समय सभी परिवार के सदस्यों को एकत्रित करके अतिमहत्व की वात सुनाता है। आज भी यह देखा जाता है कि प्रायः बहुत ऐसे परिवार वालों ने उस अंतिम उपदेश को अपने जीवन में उतारा है और उस आज्ञा का पालन भी किया है।

इसी परिप्रेक्ष्य में सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण को आज लाखों की संख्या में त्यागी-गृही आश्रितजन अपना इष्टदेव मानते हैं। स्वामिनारायण भगवान इस पृथ्वी पर मनुष्य देह धारण करके जब तक रहे अनेको सभाओं में अनेको वचनामृत कहें, अपने आश्रितों को अनेकों उपदेश दिये, परंतु प्रत्येक आश्रित को यह ध्यान रहना चाहिये कि हमारे इष्टदेव अन्तर्ध्यान से पूर्व जो वचन दिये थे वे क्या थे ? क्योंकि श्रीहरि के जो अंतिम वचन थे वे आश्रितों के कल्याण के लिये थे। अत्यधिक महत्ववाले थे। इस में शंका का स्थान नहीं।

श्रीहरि के महत्व के वचन को सत्संगिजीवन में शतानंद स्वामी ने इस तरह लिखा है कि "मैं भूतल पर प्रत्यक्ष रुप से रहूँगा। वडताल में श्री लक्ष्मीनारायण तथा भक्ति-धर्म से युक्त मैं विद्यमान रहूँगा।

अहमदावाद में श्री नरनारायणदेव के रुप में प्रत्यक्ष हूँ। इसी तरह गढपुर में श्री गोपीनाथ के रुप में प्रत्यक्ष हूँ। मुझ में तथा इन विद्यमान प्रतिष्ठित मूर्तियों में थोड़ा भी अन्तर नहीं है। इन मूर्तियों के रुप में सदा इस भूतल पर रहूंगा। इसे निश्चय जानें। इन प्रत्यक्ष मूर्तियों का जो दर्शन करेगा उन्हें मेरा साक्षात् दर्शन होगा। वर्तमान में ये मूर्तियां प्रत्यक्ष का कार्य करती हैं। इस लिये आप सभी प्रत्यक्ष स्वरुप इन मूर्तियों का भक्तिभाव से सेवन करना। मेरे सामने बैठे हुये अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरप्रसादजी ये देनो आप सभी के गुरु (आचार्य) है, इन्हीं की आज्ञा में रहना तथा शिक्षापत्री में बताये गये

नियमों का पालन करना।

सत्संगिभूषण ग्रंथ में भी स.गु. वासुदेवानंद स्वामी ने स्वामिनारायण भगवान के वचनों को लिखा है कि - "मैं ईश्वर हूं, सर्वेश्वर हूँ तथा सबसे परे अक्षरधाम से आप सभी का कल्याण करने के लिये इस पृथ्वी पर आया हूँ। हे भक्तों ! आप सभी किसी प्रकार की चिंता मत करना। मैं इस पृथ्वी पर सदा रहनेवाला हूँ। वडताल, अहमदाबाद, गढपुर इन मंदिर की मूर्तियों में तथा मुझ में कोई अन्तर नहीं है। इन मूर्तियों का भक्तिभाव से सेवन करना। अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी दोनो आपके आचार्य हैं। इन लोगों को मेरी जैसी सेवा करना। पूजा करना।"

श्रीकृष्णलीलामृत ग्रन्थ में स.गु. महानुभावानंद स्वामीने श्रीहरि के वचन को इस तरह लिखा है - "हूं तो मारा हाल ना मनुष्य रुपे तमने नहिं देखाऊं। सत्सगमां तो मारु विचरण हमेशां छेज। ज्यारे तमे याद करशो त्यारे हुं दर्शन आपीश। वणी में नरनारायण, लक्ष्मीनारायण गोपीनाथ वगेरे जे मूर्तियों पधरावी छे, तेमां हुं साक्षात् रहेलो छुं. छता पण नरनारायण ने विषे हुं अधिक पणे रह्यो छुं. कारण के दुर्वासाना शापना निमित्त थी नरनारायण रुपे हुंज अक्षरधाममांथी पृथ्वी ऊपर मनुष्यरुपे प्रगट थयो छुं. माटे जे भक्तो नरनारायणनी सेवा करशे, पूजा करशे, भेंट अर्पण करशे, ते सेवा

पूजा, भेट वगेरे नरनारायण स्वरुपे हुंज अंगीकार करीश । थाल करशे तो ते थाल हुंज जमीश । तमारा सुख-दुःख नरनारायण भगवानने कहेजो । तेमां रहीने हुंज तमने सहाय करीश । अमारी गादीए स्थापेला बंने आचार्यो साक्षात् अमारुं ज स्वरुप छे । माटे सर्व आश्रितोए तेमनी आज्ञानुं यथार्थ पालन करवुं । कोई पण आज्ञानुं क्यारेय उल्लंघन करवुं नहीं ।'' विशेष में श्रीहरि इस ग्रंथ में कहते हैं कि देश विभाग करके दो आचार्यो को नियुक्त किया है, इन दोनों आचार्यो के जीवन निर्वाह के लिये प्रत्येक हरिभक्त वार्षिक आधा रुपया (वर्तमानमें पांच रुपये) भेंट देंगे । इससे उनकी आजीविका का निर्वाह होता रहेगा ।

स.गु. प्रसादानंद स्वामी की वातों में लिखा है कि - ''औद्धवी (उद्धव) संप्रदाय मां बे मार्ग (निवृत्तिमार्ग तथा प्रवृत्तिमार्ग) बांध्या छे । तेमां रहीने अमारी आज्ञा पालशो, अने अमारा स्वरुपनो दृढ निश्चय राखशो तो अमारा अक्षरधामने पामशो..... एम चार संप्रदाय छे, तेम पांचमी उद्धवी संप्रदाय सर्वेना उपर अमे बांधी छे । ने जेम माला नो मेर होय तेम चार संप्रदाय ऊपर मालाना मेरना स्थाने उद्धवी संप्रदाय स्थाप्यो छे...... एम देश देश मां मंदिरो कराव्यां छे अने अमारा पुत्र ने दत्तक विधिथी स्वीकारीने बे गादी नी स्थापना करीने आचार्यो बनाव्या छे । बे देश विभाग करीने मंदिरो वहेंची आप्या छे । माटे आचार्यो ने अमारुं स्वरुप मानीने घेर-घेर पधरामणी करीने पूजजो एम अमारी छेल्ली आज्ञा छे ।''

सभी शास्त्रो का आधार लेकर यह कहा जा सकता है कि श्रीहरि ने अपने वचनो में श्री नरनारायणादिक देव, दो गादी के दो आचार्य तथा शिक्षापत्री का प्राधान्य बताया है । यदि कोई ऐसा कहता हो कि हम भगवान स्वामिनारायण के आश्रित हैं तो सभी त्यागी-गृहीजन अपने मन में विचार करें कि शिक्षापत्री की मर्यादा में रहकर श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित देव-आचार्य के वफादार हैं या नहीं ? धर्मवंशी आचार्य से दीक्षा लेने मात्र से कार्य पूर्ण नही होता दीक्षा लेने के बाद भी उनसे दूर होते जाते हैं । वर्तमान पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के विरुद्ध आचरण करने से मोक्ष मार्ग बिगड़ेगा ।

श्रीहरि द्वारा निर्मित नव मदंरों की व्यवस्था तथा उत्तर दायित्व मूल गादी के दोनो आचार्यों के हाथ में श्रीहरिने सौंपा था । इसलिये प.पू. आचार्य महाराजश्री जिसे व्यवस्था संभालने के लिये नियुक्त करें वे सेवा की भावना से कार्य संभाले । मूल संप्रदाय का कोई मंदिर हो या गुरुकुल हो वह प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में होना चाहिये । मुमुक्षुओं को श्रीहरि की पहचान कराना सच्चे संत का लक्षण है । दूसरी वात यह भी कि जब संत कथा प्रवचन करें तब मूल गादी संस्थान के महत्व को वताते हुये आचार्यश्री तथा देव का महत्व भी अचूक बतावें ।

इसके अलांवा जो अधिक बुद्धिशाली त्यागी हों या गृहस्थ वे यदि मूल संप्रदाय को छोड़कर अन्यत्र श्रम करते हैं वे अवश्य आगे जाकर पश्चाताप ही करते हैं । जिन्हे अपने इष्टदेव के वचन में विश्वास है वे विमुख मंदिर में या उनकी सभा में नहीं जाते । जो बुद्धिहीन होते हैं वे विमुखों के यहाँ जाकर माथाटेकते हैं ।

श्रीजी महाराज कहते हैं कि जहाँ प्रतीति हो वहीं माथा टेकना चाहिये । लेकिन वहाँ पर हमारा अपना पन होना चाहिये । वहीं पर हम रहते हैं अन्यत्र नहीं । इस तरह जिसे जहाँ भटकना हो वह वहाँ जाकर भटके । लेकिन महाराजने तो वडताल तथा अहमदाबाद की दो ही गादी बनाई थी । तीसरी कोई अन्य उन्हे इष्ट होती अथवा श्रेयकारक होती तो अवश्य बनाते । तीसरी कोई भी श्रेय देनेवाली नहीं है यह निश्चित हो जाता है । देव को माने तथा बड़े-बड़े धर्म करे परंतु विद्यमान ध.धु. आचार्य से दूर रहे और उन्हें गौड़ माने, बाद में यह भी कहें कि हमारा कल्याण तो श्रीजी महाराज करेंगे । यहाँ एक वात स्पष्ट करने लायक है कि वर्तमान समय में अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान पर प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा वडताल गादी श्री लक्ष्मीनारायण देव पीठ स्थान पर प.पू.ध.धु. १००८ श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री विराजमान हैं ।

साष्टांग दंडवत प्रणाम क्यों ?

- एन. एस. चौधरी (बालवा)

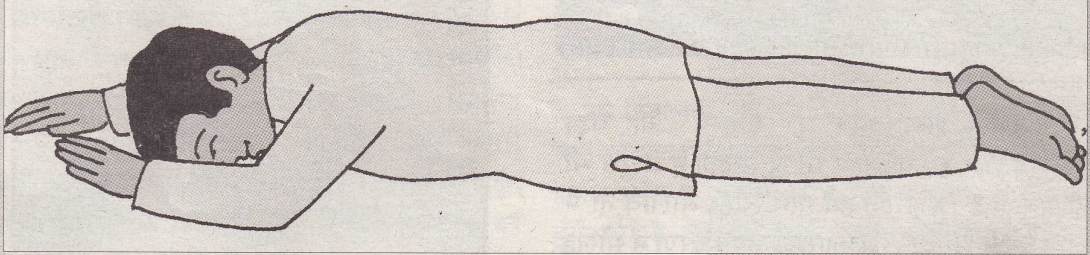

भारतीय संस्कृति में कुछ मान्यताये मनुष्य मात्र के जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने के लिये परमेश्वर की अनमोल भेंट कही जाती है। अपनी धार्मिक मान्यताओ में वैज्ञानिक रहस्य छिपा हुआ है । शिक्षापत्री श्लोक ७८ में श्रीजी महाराज ने कहा है कि भगवान को साष्टांग प्रणाम करना चाहिये । अष्ट अङ्गेन सहितं साष्टांगम् आठ अंगो से प्रणाम करने का विधान बताया गया है । पग, हाथ, घुटना, छाती, मस्तक, आंख, वाणी, मन इस तरह आठ अंगो से प्रणाम करने का विधान है। साष्टांग प्रणाम करने का अधिकार मात्र पुरुषों के लिये हैं । भगवान के सामने दंड की तरह अर्थात् लकड़ी की तरह सीधा सोजाना चाहिये, जिससे आठ अंग जमीन से सटे हो उसे अष्टांग प्रणाम कहते हैं। भगवान के चरणों में मन, वाणी, स्तुति, प्रार्थना या मंत्र जप द्वारा भगवान के चरण में गिरकर अर्थात् साष्टांग प्रणाम करते हुये अपनी भावना को प्रभु के चरण में अर्पण करनी चाहिये ।

श्रीजी महाराज ने लुप्त इस साष्टांग प्रणालिका को पुन: आरंभ किया। साष्टांग प्रणाम से मनुष्य के जीवन में नम्रता आती है । अहंकार नष्ट होजाता है । समर्पण की भावना आती है। इसीलिये अपने संप्रदाय में सत्संगी मात्र के लिये यह आज्ञा है कि वे मंदिर में जब जांय तो भगवान के सामने साष्टांग प्रणाम करते हुये स्तुतिपाठ करें -

विश्वेश छो सकल विश्वतणा विधाता,
त्राता तमे सकल मंगल शांति दाता ।
माटे तमारुं करुणा निधिसत्यनाम,
साष्टांग नाथ तमने करुं हुं प्रणाम ॥

हे अखिल ब्रह्मांड के अधिपति ? हे देवों के देव ? सभी को सुख-शांति देने वाले - सत्य-दयालु स्वभाव वाले ? हे धर्मनंदन श्रीहरि ? मैं आपको साष्टांग प्रणाम करता हूँ।

''अज्ञानपाश करुणा करी कापी आपो,
नित्ये प्रभु तव पदे मम वृत्ति राखो ।
भक्तोनुं पालन करो प्रभु सर्वयाम,
साष्टांग नाथ तमने करुं हुं प्रणाम ॥''

हे प्रभु ! हे दयालु ! हमारी अज्ञानता को दूर करके ज्ञान के दीपक को जलादीजिये, नित्य प्रति आपके चरणों में मेरा मन रहे तथा भक्तों को चारो दिशाओं में रक्षण करने वाले हे स्वामिनारायण भगवान आपको मैं साष्टांग प्रणाम करता हूँ।

जो नमता है वह सभी को प्रिय होता है। इस न्याय के अनुसार श्रीहरि ने सत्संग में यह प्रथा साष्टांग प्रणाम की प्रचलित की थी। यह शरणागति का प्रतीक है। इसे अपने जीवन में सभी लोग उतारे इसी में सभी का कल्याण है।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये
जेतलपुर: www.jetalpurdarshan.com
महेसाणा: www.mahesanadarshan.com
छपैया: www.chhapaiya.com
टोरडा: www.gopallalji.com

दिव्य संकल्प के साथ

– अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (न्युजर्सी-अमेरिका)

गुजराती शब्द कोष में ''संकल्प'' यह बड़ा अद्भुत शब्द है। यह शुभ भी हो सकता है अशुभ भी हो सकता है। महाराज हमे नाम लेकर बोलावें तो मैं जानुं को वे भगवान हैं। महाराज अपने चरण में सोलह चिन्हों का दर्शन करावें तो ही उन्हें भगवान मानूं। महाराज मुझ से गुलाब का हार मांगलें तो वे सच्चे भगवान है, इस तरह के अनेकों संकल्प महाराजने भक्तों के पूर्ण किये हैं।

सर्वावतारी श्रीहरि के साथ जुड़े हुये सभी संकल्प मोक्षमार्ग पर लेजाने वाले हैं। उनके उपयोग की वस्तु मात्र जड़ नहीं है, परंतु उनके दर्शन में मन की शांति छिपी हुई है। मानुष्य जब भगवान बनना चाहता है, तब उसके पास आने वाले प्राय: सभी जीवों का कल्याण बाधित होजाता है। जब कि भगवान के पास आने वालों का कल्याण मार्ग खुल जाता है। श्रीहरि के सामर्थ्य की कोई सीमा नहीं है, वे चरणारविंद की छाप किसी भक्त के प्रेम में अवश्य देते थे, उसका शुभ आशय यह होता था कि उस जीव का ही कल्याण न हो, बल्कि इसके दर्शन से अनेकों जीवों का कल्याण हो। यह ''सर्वजीव हितावह'' की भावना मात्र श्रीहरि में थी।

श्री नरनारायणदेव देश गादी के छठे आचार्य प.पू. बड़े महाराजश्री ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम बनाने का दिव्य संकल्प किया, जिसे पूर्ण करने की भावना आज साकार रुप ले रही है। अपने संप्रदाय का यह श्री स्वामिनारायण म्युझियम विश्व का सर्व प्रथम तथा अन्तिम म्युझियम होगा, क्योंकि इस म्युझियम में भगवान स्वामिनारायण की प्रसादी की वस्तुयें रखी जायेंगी। जो दिव्य है, अलौकिक है, इन वस्तुओं का पुन: रीप्रोडक्शन हो नहीं सकता। इसलिये जगत में यह म्युझियम सबसे अलग तथा अलौकिक होगा। इसमें भगवान की प्रसादी की वस्तुयें होगी।

श्रीहरि के अंग से संयुक्त जो वस्तुयें हैं वे धर्मवंशी आचार्य परंपरा में आज भी सुरक्षित हैं। मूलभूत एवं प्रमाणित हैं (ओरीजीनल) है। संतो तथा हरिभक्तों के पास परंपरा में प्राप्त वस्तुयें भी उतनी ही प्रामाणित है। इन प्रामाणिक वस्तुओं को म्युझियम में दर्शनार्थ रखा जायेगा।

''दांत ने खोतरे रे, सली रुपानी लईने'' रुपा की सुंदर सली से दांत खोदते। ''चाखडी चढीने वहालो चटकतो चाले'' जिसकी ध्वनि मात्र से लोगों को समाधिलगजाती थी। इस प्रकार की सभी वस्तुयें म्युझियम मे संग्रहीत की जायेंगी।

प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प पूर्ण होने के कगार पर आगया है। ता. निश्चित होगयी है। ८-३-२०११ फाल्गुन शुक्ल-३ संवत् २०६७ श्री नरनारायणदेव का १८९ पाटोत्सव दिन। कितना सुदंर योग है। यह क्यों न हो ? श्री नरनारायणदेव तथा भगवान श्री स्वामिनारायण का ऐक्य भाव है।

प.पू. बड़े महाराजश्री अपने निवृत्ति काल में इतना प्रवृत्त हो गये कि अशक्य कार्य भी शक्य होगा।

अपने देश के लोगों ने इस कार्य में सहयोग तो किया ही है, परंतु विदेश में रहने वाले सत्संगियों का योगदान अविष्मरणीय है। विदेश में रहने वाले सत्संगी पू. महाराजश्री, पू. बड़े महाराजश्री तथा दोनो गादीवालाजी को अवार-नवार आमंत्रित करके दर्शन का लाभ तो लेते हीं है। साथ ही श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये यथाशक्य भेंट भी देकर जीवन को धन्य बनाये हैं.

अभी ता. ४-३-१० से २२-३-१० तक प.पू. बड़े महाराजश्री अमेरिका के प्रवास में गये थे। साथ में पू. निर्गुण स्वामी, कोलोनिया मंदिर से पू. माधव स्वामी इसके साथ वोशींग्टन डी.सी. चेप्टर के आगेवान हरिभक्त श्री कनुभाई एम. पटेल, आई. एस. एस.ओ. के अलग अलग चेप्टर के अग्रगण्य सत्संगी लोग प्रवास में थे। सतत १८ दिन तक अनेक स्थल पर पदार्पण करके सभी को संतुष्ट किये थे। सभी के मन में एक भाव था कि पू. महाराजश्री मेरे घर पदार्पण करके श्रीहरि का दिव्य संकल्प यहाँ तक मन की शांति प्रदान करनेवाला हो।

पदार्पण के समय एक जगह ऐसा हुआ कि पप्पा-मम्मी उपस्थित रहने वाले थे, लेकिन संयोगवश नौकरी से अवकाश नहीं मिला। घर में १० वर्ष तथा ५ वर्ष के दो बेटा-बेटी थे वे दोनो खिलौने से खेल रहे थे। पू. बड़े महाराजश्री तथा संत समय से पहुंच गये। पू. महाराजश्री शांति से बैठ गये, संतो ने दीपक तैयार किया और आरती उतार रहे थे कि वे दोनो दंपती दौड़ते-दौड़ते आगये। अपनी भाग्य की सराहना करते हुये पू. महाराजश्री के चरणों में गिर पड़े। पू. महाराजश्री उनकी भावना को प्रेममयी दृष्टि से देख रहे थे। यह दृश्य अपने देश में सायद देखने में मिले।

लगभग १० जितनी सभा का भी आयोजन किया गया था। जहाँ सभां होती वहाँ अगल-बगल के शहरी हरिभक्त उमड़ पड़ते थे। हर जगह कीर्तन-भजन-प्रवचन होता अंत में पू. महाराजश्री सभी को हार्दिक आशीर्वाद देते थे। सभा में डी.बी.डी. विडियो द्वारा श्री स्वामिनारायण म्युझियम प्रोजेक्ट को दिखाया जाता था। इस डि.बी.डी. में म्युझियम की आवश्यकता का पूर्ण रहस्य समझाया गया है, जिसे देखकर या सुनकर यथार्थता का अनुभव होता है। फलतः सभी उत्साहित होकर म्युजियम के लिये यथासंभव भेंट लिखवाते हैं। और पू. महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

विदेश में रहने वाले अपने सत्संगियों में छोटे बालकभी पीछे नहीं रहे। अपने पाकिटमनी में से बचाकर ५, ११, २१ डोलर लेकर पूज्य महाराजश्री के चरणों में अर्पण करते थे। पू. महाराजश्री भी प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद देते थे।

सत्संगी बहनो का योगदान भी उतना ही सराहनीय है। अमेरिका जैसे देश में सुख-सुविधा की कोई कमी नहीं है। परंतु उसे प्राप्त करने के लिये सतत परिश्रम करना पड़ता है। वैश्विक मंदी होते हुये भी अपने सत्संगी श्रीहरि का तथा सत्संग का बल रखते हैं जिससे वे सुखी हैं। बालकों में भी सत्संग का प्रभाव होने से उनकी जीवन शैली में वहाँ की संस्कृति का प्रभाव नहीं है, इसीलिये तो वे अपनी पाकिट मनी का भी दान करने में संकोच नहीं करते।

यहाँ से जाने वाले घूंमते-फिरते होंगे यह विचार गलत है। मात्र पू. महाराजश्री के साथ भक्तों के घर पदार्पण करना, सभा में जाना, सत्संग की प्रवृत्ति द्वारा सत्संगियो को संतुष्ट करना यही सब होता है। ऐसा साथ में जाने वालों को अनुभव होता है।

प्रत्येक सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री जो मार्मिक आशीर्वाद देते वह भी मनन के योग्य होता था। अपने दिव्य संकल्प "श्री स्वामिनारायण म्युझियम की भावना को जब वे स्वमुख से वर्णन करते उस समय धर्मप्रेमी खड़े होकर भेंट लिखायें विना रह नहीं पाते।"

श्री स्वामिनारायण म्युझियम वर्ष जब मनाया जारहा है तो इस वर्ष में अपना यथायोग्य दान करके जीवनको सफल बनावें। पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य संकल्प को साकार करने के लिये गोकुल के गोप बालों की तरह हमें भी मात्र लकड़ी से गोवर्धन रुपी म्युझियम को साकार करने में मदद करना है।

श्रीजी महाराज द्वारा बताये गये दुःख निवृत्ति के मार्ग

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट (भुज)

समुद्र में एक ही गति से जहाज नहीं चलता। तूफानी हवा के कारण जहाज की गति रुक जाती है। हवा के वेग में जहाज हिलने डुलने लगता है। इसी तरह मनुष्य के जीवन में सुख दुःख रुपी हवा का वेग आता रहता है। ऐसी लोकोक्ति है कि ''दशका सुखदश का दुःख'' दश वर्ष सुख में वीतेगा तो दस वर्ष दुःख में वीतेगा। सुख तथा दुःख में समान स्थिति वाले को स्थित प्रज्ञ कहा गया है। गीताजी में भगवान श्रीकृष्णने स्थित प्रज्ञ का लक्षण बताया है। सुख की अपेक्षा दुःख में मनुष्य दिशा शून्य हो जाता है। दुःख जब आता है तो मनुष्य अवाक रह जाता है। दुःख के कारण मनुष्य रोगी होता है और नानाविधउपाय खोजने लगता है। जब दुःख का पहाण मनुष्य के ऊपर टूट पड़ता है तब वह भगवान की याद करता है। शांति की झंखना में दर-दर ठोकरें खाने लगता है।

इस संसार सागर से पार होने के लिये श्री स्वामिनारायण भगवान ने वचनामृत में दुःख निवृत्तिका राजमार्ग बताया है। इस राजमार्ग पर विचरण करने वाले को दुःख का स्पर्श भी नहीं होता। अपने आप दुःख से निवृत्ति होजाती है। श्रीजी महाराजने गढडा प्रथम के ३४ वे वचनामृत में कहा है कि ''भगवानना आज्ञा लोपवे करीने थाय छे अने जेटलुं सुख थाय छे ते भगवानना आज्ञा पालवे करीने थाय छे।''

सच्चे संत के सामर्थ्य को बताते हुये सहजानंद स्वामी गढडा प्रथम प्रकरण के १४ वें वचनामृत में कहे हैं कि ''गृहस्थना धर्म तो घणा कठण छे अने अनंत प्रकारना सुख दुःख आवी पड़े त्यारे संत नी सेवामां थी अने धर्ममांथी मनने आडुं अवडुं डोलवा दे नहि अने एम समझे ने संत नो समागम मल्यो छे ते तो मने परम चिंतामणी अने कल्पवृक्ष मल्या छे अने धन दौलत दीकरा-दीकरी एतो सर्वे स्वप्न तुल्य छे। अने साचो लाभ तो संतनो समागम मळ्यो एज छे। एम समझे अने कोईपण भारे दुःख आवी पडे पण तेथी पाछो पडे नहीं। एवो गृहस्थ श्रेष्ठ छे। गढडा प्रथम के ६१ वें वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं कि ''जेम भगवान आपणने कसणीमां राखे तेम तेम वधु राजी थवुं जोइये। जे भगवान मने जेम वधु दुःख देशे तेम तेम वधु मारे वश थशे अने लेशमात्र माराथी छेटे नहीं रहे। एवुं समजीने जेम जेम भगवान अति कसणी देता जाय तेम तेम अति राजी थवुं पण कोई रीते दुःख देखीने अथवा देहना सुख सारुं पाछो पग भरवो नहि।''

सत्संगी को कभी भयंकर दुःख आजाय जैसे किसी के नसीब में भीख मांगना लिखा हो अथवा बीच्छी के समान डंक जितनी पीडा लिखी हो तो इन सभी पीडाओ से हमारे सत्संगी मुक्त रहें यह वचन अपने गुरु रामानंद स्वामी से श्रीहरि ने मांग लिया था। इसीलिये गढडा प्रथम के ७० वे वचनामृत में श्रीजी महाराजने कहा है कि ''अतिशय दुःख थवानुं होय तो एमांथी जीवने एम समजातु नथी के भगवानना कृपाथी ते दुःख अवश्य दूर थई जशे. जो शूली का दुःख लिखा होगा तो कांटे से दूर हो जायेगा।''

विशेष में जेतलपुर के पांचवे वचनामृत में श्रीजी महाराजने कहा है कि ''अमारो दृढ विश्वास राखशो ने कहिये तेम करसो तो तमने महाकष्ट कोई आवी पहुचे तेथी अथवा सात दुकाली (दुष्काल जेवुं दुःख पडशे तो ते थकी रक्षा करशुं। अने कोई उगर्यानो आरो नहि होय एवुं कष्ट आवी पडशे तोय पण रक्षा करशुं। जो अमारा सत्संगना धर्म बहुरीने करीने पालशो तो, ने सत्संग राखशो तो।'' वडताल के वचनामृत में कहते हैं कि ''भगवाननो दृढ आशरो जेने होय तेने महाप्रलय जेवुं दुःख आवी पड़े तो पण ते दुःख थकी रक्षा नो करनारो भगवान विना बीजा ने न जाणे अने जे जे पोताने सुख जोइतुं होय ते पण भगवान थकीज इच्छे ने प्रभु नी मरजी होय ते प्रमाणे ज वर्ते।''

इस तरह श्री सहजानंद स्वामीने सभी के लिये जब दुःख आजाय तब दुःख दूर करने की उपाय बताया है। दुःख से निवृति का इससे उत्तम उपाय कोई नहीं है।

आनंद की लहर

विवाह में दहीं लेपन विधि

अपने पुत्र के विवाह का कितना उत्साह माँ-बाप को होता है। चाहे जैसे भी मां-बाप हों पुत्र के विवाह में खर्च के लिये बचत करते रहते हैं। धूमधाम की तैयारी करते हैं। सारे समाज देखने आवे ऐसी भावना उनके मन रहती है।

इसीतरह महाराज का मन दादा खाचर के लिये था। महाराज स्वयं दादा खाचर के विवाह प्रसंग पर रथ चालक बने थे। यह भक्तवत्सलता का अनुपम परिणाम है। दादा विवाह के लिये मना करते रहे और महाराज उनकी जीवन कहानी अमर कर दिये। इस विवाह प्रसंग पर देश भर से संत-हरिभक्त पधारे थे। प्रायः सभी को आमंत्रण पत्रिका प्रेषित की गयी थी। आने वालों को नाना विधभोजन कराया गया। व्यज्जनों की कोई सीमा न रही। इसके साथ ही शुभ करने के लिये दही खूब मंगाई गयी थी। सभी के खाने के बाद जब बच गयी तब संतो ने कहा महाराज ? बची दही का क्या करें ? महाराजने कहा दही बहुत शुभ होती है। इसका प्रयोग प्रत्येक प्रसंग में होता है। लाइये इसका उपयोग करते हैं। मातरा धाधल समधी पक्ष के है। तथा महानुभावानंद स्वामी उनके मित्र है। इसलिये दोनो समधी कहे जायेंगे। उन्हीं दोनो के माथे पर दही लगाते हैं। बाल्टी भरी दही मातरा धाधल तथा महानुभावानंद स्वामी के मस्तक पर उलेड़ कर हाथ से लपेटने लगे। यह अद्भुत लीला देखने के लिये संत-हरिभक्तों की भीड लग गयी। ऐसे दोनो लग रहे थे जैसे दही का पहाण हो। श्वेत मूर्ति के सामान देखकर लोगों को लगा कि यह कोई उत्सव हो रहा है। सभी प्रसन्नता पूर्वक श्रीहरि की लीला का यह दृश्य देखकर जन्म सार्थक कर लिये।

ब्रह्मानंद स्वामी तथा मुक्तानंद स्वामी उस समय वहाँ नहीं थे बाद में आये तो महाराज से कहने लगे प्रभु ! आज आपने किसी के मस्तक पर दही लेप लीला की थी, हमे इस दुर्लभ लीला का दर्शन तो नहीं हुआ। श्रीहरिने कहा इस तरह की लीला का दर्शन कभी आप सबको भी दिखाऊँगा। इतना कहकर महाराज अपने शयनीय कक्ष में जाकर सोगये। दूसरे दिन जलेबी इत्यादि पक्वान की रसोई थी। आने वालों को बड़े प्रेम के साथ भोजन कराया गया था। सभी तृप्त हो गये। बाद में महाराज ने उद्घोषणा की कि संतो ! आज मैं खूब भोजन किया हूँ। फिर भी आपलोगों को इससे अधिक भोजन करना हो तो एक अवसर और है। आप लोग जितना जलेबी खायेंगे उनता हम भी खायेंगे।

महाराज को खिलाने की इच्छा से कितने संत कहने लगे हाँ महाराज हम जलेबी खायेंगे जितना संत जलेबी खाये उतना स्वयं महाराज भी खाये। प्रभु ने पुनः लालच दिये, संतो ! और भी यदि जलेबी आपलोग खायें तो आप की छाती में चरणारविंद की छाप दूंगा। दुर्लभ चरणारविंद की लालच में संत एक एक जलेबी खाये। बाद में श्रीहरिने सभी के छाती पर चरणारविंद की छाप दिये।

उस समय सबसे चालाक महानुभावानंद स्वामी इग्यारह जलेबी लिये और अपने कुर्ते में छिपा दिये। इस तरह वे इग्यारह बार चरणारविंद की छाप लिये थे। बाद में उन छिपाई हुई जलेबी को निकालकर तांबा के लोटे में रख दिया, यह दृश्य चैतन्यानंद स्वामीने देख लिया। महाराज से वे कहने लगे महाराज महानुभावानंद स्वामीने कपट किया है। एक भी जलेबी खाये नहीं फिर भी इग्यारह बार चरणारविंद की छाप लिये हैं।

महाराजने कहा कोई वात नहीं ये हमारे साथ कपट किये हैं। इसका बदला तो लेगे। अभी ये समधी पक्ष के हैं। अवसर आने की प्रतिक्षा है। चोरी की शिक्षा देनी पड़ेगी। इतना कहकर दही का पात्र उठाये और महानुभावानंद स्वामी के मस्तक पर गिराने लगे। पूरा शरीर दही वाला हो गया।

दही से ओतप्रोत देखकर ब्रह्म मुनि तथा अन्य संत हंसने लगे। स्वामी को इस लीला का दर्शन करना वाकी था वह पूर्ण हो गया। उसी सयम श्रीहरि की दृष्टि ब्रह्मानंद स्वामी पर पड़ी, अब दूधका घड़ा लेकर उनके ऊपर डालने लगे। जयजयकार के साथ अभिषेक होने लगा। सर्वत्र आनंद आनंद की लहर फैल गयी। इस तरह दादा खाचर का विवाहोत्सव धूमधाम से मनाया गया। संत-हरिभक्त सभी इस आनंद में भागीदार बनकर आनंद लिये।

– शा. हरिजीवन स्वामी (हिंमतनगर महंतश्री)

सत्संग सुरभि

– अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (न्युजर्सी-अमेरिका)

अमारुं बिरुद अमे केम चूकिये

जामनगर जिले में घी नदी के किनारे कंडोरणा नामक एक छोटा सा गाँव है। इस गांव में पटेल तथा ब्राह्मणो की वस्ती अधिक है। इस गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति भादा पटेल थे, जो स्वयं वैष्णव धर्म पालते थे। इस गाँव में गोपाल बारोट तथा डोसा बारोट महाराज के सत्संगी थे। एकबार अचानक महाराज इनके घर पधारे। एकाएक अतिथि के रुप में महाराज को पधारा हुआ देखकर दोनो बहुत प्रसन्न हुये। उत्तम आसन पर बैठाकर गोपाल महाराजके चरण में गिर पडा।

प्रभु ! आप आये तो अब एक सप्ताह यहीं पर रुकें। इस तरह आदर पूर्वक दोनो भक्तों ने कहा। महाराज सायंकाल घी नदी में स्नान करके आये और इमली वृक्ष के नीचे आसन लगवाकर सभा किये। उस समय गाँव के अनेकों लोग आये जिस में एक ब्राह्मण देवता भी थे। महाराज की लोभावनी मूर्ति देखकर वे मुग्धहो गये। महाराज के विषय में वे बहुत कुछ सुने थे। जिस वृक्ष के नीचे महाराज बैठे थे उसकी घनी छाया देखकर प्रसंशा करने लगे। ब्राह्मण प्रसंशा सुनकर बोलें कि महाराज इस वृक्ष के नीचे ब्राह्मण भोजन करें तो ही इस छाया की उपयोगिता है, अन्यथा नहीं।

भूदेव ! आपका क्या नाम है ? महाराज हंसते हुये पूछे। जटा शंकर ?

यहाँ ब्राह्मण की कितनी संख्या है।

''सौ जितनी।''

जटा शंकर आप अभी जाकर गाँव में सभी ब्राह्मणों से कह दें कि स्वामिनारायण कल ब्रह्मभोज करने का निमंत्रण दे रहे हैं। सभी को स्वयं यहाँ बनाना खाना है कच्चा सिद्धा सम्पूर्ण हमारी तरफ से दिया जायेगा। जटा शंकर तो खूब प्रसन्न हो गये। महाराज के चरणों में गिर पड़ा और गाँव वालों को जाकर निमंत्र दे आया। ब्राह्मण खुश हो गये।

गोपाल तथा डोसा बारोट महाराज की इस लीला को देखते ही रह गये। प्रभु की लीला कौन जान सकता है। ऐश्वर्य के स्वरुप स्वयं है, पूर्ण भी यहीं करेंगे।

निवास स्थान पर जाकर महाराज ने कहा, डोसाभाई? गाँव के सभी ब्राह्मणों को भोजन का निमंत्रण तो दिला दिया अब क्या किया जाय ?

महाराज ! आप की दृष्टि मात्र से सूखा वृक्ष भी हरा फूल-फल से युक्त हो जाता है। आपकी भृकुटि के भंग मात्र से ब्रह्मांड कांपने लगता है, ब्रह्म भोज की क्या वात है ? महाराज ने कहा, सौ ब्राह्मण का कच्चा सिद्धा इस गाँव में मिल सकता है या नहीं ?

प्रभु ! मिल जायेगा। गाँव के भादा पटेल के यहाँ जाम बापू सेना के साथ आने वाले थे। संयोगवश वे नहीं आये। इस लिये वह सभी भोजन सामग्री जैसी की तैसी पड़ी है। लेकिन पटेल तो कहीं बाहर गये हैं।

इस में क्या पटेल की पत्नी तो घर में होगी न ? हाँ महाराज ? लेकिन हमारी वहाँ क्या गिनती ? यह सुनकर महाराज ने कहा आप किसी से केवल यह संदेश भेंजवा दीजिये कि स्वामिनारायण इस गाँव में आये है, और कल ब्रह्मभोज कराना चाहते हैं, उनके पास जो भोजन सामग्री है इमली वृक्ष के नीचे भेंजवा दें। आप भोजन बनाने की लकडी इत्यादि की व्यवस्था कीजिये। क्योंकि प्रातः होते ही ब्राह्मण आजायेंगे।

डोशाभाई को हुआ कि पटेल की पत्नी तो वैष्णव धर्म वाली है यदि मना कर दी तो क्या होगा ? लेकिन यह तो महाराज का काम है। हिंमत करके वे पटेल के घर गये, उस समय पटेल की पत्नी बालकृष्ण की मूर्ति को भोग लगा रही थी। डोसाभाई महाराज के वचन को अक्षरशः सुनादिये।

पटेलानी पूर्व की पूर्ण संस्कार वाली थी। स्वामिनारायण इस गाँव में पधारे हैं और ब्रह्मभोजन के लिये रासन मांग रहे है, यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई। पटेलानी ने बारोट से कहा कि आप जाकर महाराज को कहिये कि जो आप संदेश भेंजे है वह सभी पूर्ण होगा, लेकिन आप भगवान है, आप यह सेवा का अवसर दिये यही मेरी बड़ी भाग्य है। महाराज आज एक जीवात्मा का कल्याण करने की पूर्व भूमिका तैयार किये। महाराज अपनी दैनिक क्रिया करके शांति से सो गये, लेकिन रतन बा को महाराज की आज्ञा सोने नहीं दी।

रतन बा पूरी रात अपने सेवकों को साथ लेकर गाड़ियो में रासन पताई भरवाने का कार्य करती रहीं। महाराज को नींद नहीं आये वे वहाँ से पटेलानी की भक्ति देखने रात्रि के शांत वातावरण में अकेले ही निकल पड़े। देखा तो स्वयं रतनबा अपने सेवकों से भोजन सामग्री तथा भोजन बनाने की लकड़ी गाडियों में लदवाकर भेंज रही थी। प्रातः होने से पूर्व सारी सामान उस इमली वृक्ष के नीचे पहुंच गया। महाराज भी रतनबा की भक्ति देखकर बा के घर पहुँच गये। रतनबा प्रातः काल महाराज को देखकर बहुत प्रसन्न हुई। उनके दोनो पुत्रों के मस्तक पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिये।

इधर प्रातः होते ही ब्राह्मण सपरिवार आने लगे। हर हर महादेव की नांद होने लगी। श्रीहरि अपने हाथों से ब्राह्मणों को सिद्धा देने लगे। चारो तरफ स्वामिनारायण की जय घोष होने लगी। आज सम्पूर्ण गाँव भोजन के लिये बुलाया गया था। सभी महाराज के हाथों प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे।

ब्राह्मण आनंद में आकर स्वामिनारायण की जय जय कार करने लगे। कंडोरणा गाँव आज घी तथा अन्न से परिपूर्ण हो गया था।

रतन बा महाराज से प्रार्थना करने लगी कि हे प्रभु आप भी मेरा एक कण स्वीकार करें। रतना की प्रार्थना सुनकर महाराज ने ब्रह्मचारी से कहा कि थोड़ा कच्चा सिद्धा इस में ले लो और निवास स्थान पर लेजाकर तैयार करो उसी प्रसाद को मैं ग्रहण करुँगा।

महाराज ने पटेलानी से कहा कि जो रासन पानी बच गया है उसे आप अपने घर लेजाइये। जब पटेलानी रासन पताई देखने गयी तो जितना आया था उतना का उतना ही था। पटेलानी महाराज से करबद्ध प्रार्थना करने लगी कि महाराज यह तो जो आया था खर्च ही नहीं हुआ सभी वैसा का वैसा ही है। महाराज ने कहा आपकी श्रद्धा भक्ति देखकर देवताओं ने सेवा की है। पटेलानी ब्रह्मांड के अधिपति का अहोभाव देखती रही।

सायंकाल हुआ, डोसा बारोट पटेल के घर गये और कहने लगे कि आप जो सिद्धापानी भेंजी थी उसका मूल्य महाराज ने भेंजा है, उसे स्वीकार करें।

रतनबा ने कहा, सिद्धा उपयोग में ही नहीं आया तो मूल्य किसका। दूसरी बात यह कि स्वामिनारायण स्वयं भगवान है अब वे दूसरी बार भी ब्रह्म भोज करें तो भी कोई चिंता नहीं, यह घर बखरी उनकी है ऐसा उनसे आप कहियेगा। यह भी कहियेगा कि वे मेरा जीवन बना दें मेरी शरीर छूटने के समय वे मुझे अक्षरधाम ले जाय।

महाराज यह सब सुनकर खूब प्रसन्न हुये। कहा जाता है, कि महाराज स्वयं संतो के साथ बाई के अंतकाल में लेने आये थे। उस समय बाईने पटेल से कहा, में अभरधाम में जा रही हूँ। स्वामिनारायण लेने आये हैं। भादा पटेल को आश्चर्य हुआ कि हम तो वैष्णव है, स्वामिनारायण लेने कहाँ से आयेंगे।

बाईने कहा, मैंने आपकी अनुपस्थिति में भगवान स्वामिनारायण को सिद्धा दिया था और स्वामिनारायण उस सिद्धे से ब्रह्म भोज किये थे। उस समय मैं उनसे यह वर मांगी थी कि मेरे अन्त समय आप लेने आना। इसलिये वे लेने आये है। जय स्वामिनारायण।

ऐसा बोलकर बाई शरीर छोड दी।

"अधम उधारण अविनाशी तारा,
बिरुद नी बलिहारी रे......."

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सुख का मंत्र-सद्भाव

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

बात तो बहुत पुरानी है। सायद आप पढे हों। पुरानी होने से भूल गये होंगे। इसलिये पुनः वांचना आवश्यक है। क्योंकि इससे कुछ ज्ञान मिल सकता है। एक आदिवासी सभी प्राणियों पर सद्भाव रखता था। जंगल में रहने वाला चाहे कैसा भी प्राणी हो उसे देखते ही शांत हो जाता था। प्रेम की दृष्टि अलौकिक होती है। प्रेक्टिकल करना होतो, आपको देखकर कुत्ता भूंकता हो और आप प्रेम से उसकी तरफ देखकर कहें अरे कुत्ताभाई वह तुरंत भूंकना बंद करके दुम हिलाने लगेगा। ठीक यही स्थिति उस आदिवासी की थी। जो भी प्राणी इसके पास आता वह शांत हो जाता था। प्राणी अपने हिंसक वृत्ति को छोड़ देता था।

एक दिन वह आदिवासी रास्ते में चला जा रहा था। एक सिंह आगे का पैर उठाकर कुछ परेशान दिखाई दे रहा था। आदिवासी को ऐसा लगा कि सिंह के पैर में अवश्य चोट लगी होगी। धीरे-धीरे वह उसके पास गया। वह शांति से खड़ा रहा। आदिवासीने समझ लिया कि यह आक्रमण नहीं कर सकता क्योंकि इस के पैर में कांटे चुभे हुये है। इसलिये तुरंत आगे बढकर उसके पैर से कांटो को जोर से खींच लिया। वह सिंह शांति का अनुभव करने लगा। सिंह देखता रहा और वह आगे चल पड़ा। थोडे समय के बाद वह सिंह पिंजरा में बंद हो गया।

मनुष्य अपनी सौख के लिये या मनोरंजन के लिये प्राणी को पिंजरा में बंद कर देता है। बंदर, हाथी, चिता, जिराफ, इसी तरह अन्य प्राणियों को पिंजरा में बंद किया जाता है। आज तो इस सिंह को पिंजरा में बंद कर दिया गया। वह समय ऐसा विचित्र था। उस प्रदेश के राजा की ऐसी कुबुद्धि थी कि जो कोई गुनाह करे और गुनाह सच हो जाय तो गुनाहित व्यक्ति को सिंह के पिंजरे में डाल दिया जाता था। बाद में सिंह उसे फाड़ के खाजाता था। आठ महीने के बाद वह आदिवासी चोरी में पकड़ाया। गुनाह उसका सच होने पर उसे सिंह के पिंजरे में डालने का आदेश राजाने दे दिया। उस समय ऐसा किया जाता कि जब किसी को दंड देने के लिये अवसर आवे तो सिंह को एक दिन पहले से भूखा रखा जाता था। जिससे तुरंत उसे मारकर खाजाय। वह आदिवासी भी संयोग वश उसी पिंजरे में डाला गया जिसकी उसने मदद की थी। सिंह को तो भूख लगी थी आक्रमण तो किया लेकिन उस आदिवासी को वह पहचान गया। सिंह चुपचाप बैठ गया। दोनो पूरे दिन वैसे ही बैठे रहे। काम करने वालों को बड़ा आश्चर्य हुआ। यह वात राजा के पास गयी। राजा उसे अपने पास बुलाया और हकीकत बताने के लिये कहा - तुम्हे सिंह क्यों नही खाया। तुम मंत्र विद्या जानते हो या जादूगर हो ? उस आदिवासी ने कहा महाराज ! मैं कोई तांत्रिक-मांत्रिक नहीं हूँ। मैं एकबार जंगल के रास्ते से चला जा रहा था, वही पर यह सिंह कराह रहा था नजदीक जाकर देखा तो इसके पैर में कांटा चुभा हुआ था, मैं ने उस कांटे को निकाल दिया। इसी तरह जो भी जंगल के प्राणी मिलते हैं मैं सभी के प्रति सद्भाव रखता हूँ। राजा के मन में ऐसा भाव आया कि यदि मांसाहारी हिंसक प्राणी भी सद्भाव रख सकता है, सद्भाव को पहचान सकता है तो हम तो कुछ भी नहीं समझपाते हैं।

राजाने आदेश दिया कि इस आदिवासी को इनाम दिया जाय साथ में इसकी आजीविका का प्रबन्धकिया जाय। जिससे चोरी कर्म करने का अवसर न मिले।

मित्रो ! अच्छी कहानी है न ! अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण भी कितने दयावान थे।

अति दयालु रे स्वभाव छे स्वामीनो।
परम दुःख हारी रे, वारी वहुनामी नो ॥
कोई ने दुःखियो रे देखी न खमाय।

दया आणी रे अति अकणा थाय ॥
अन्न धन वस्त्र रे, आपी ने दुःख टाडे ।
कसणा दृष्टि रे देखी वानज वाड़े ॥

स्वामिनारायण भगवान जीव प्राणीमात्र ऊपर दया करते थे । जब प्रभु वनविचरण करते थे उस समय किसी ने सागजी काटने को कहा प्रभु ने मना कर दिया क्योंकि उसमें भी जीव है । इस तरह प्रभु सभी प्राणियों पर दया करते थे । इसीलिये भयंकर सिंह भी इनके आगे आकर शांतभाव से पुच्छ हिलाता था ।

इस वात से यह शिक्षालेनी है कि सभी के प्रति सद्भाव रखेंगे तो वह भी आपके साथ सद्भाव रखेगा । दूसरी वात यह भी कि हिंसक प्राणी भी किया हुआ उपकार कभी नहीं भूलते तो हमारा कर्तव्य क्या है । सदा इसका ध्यान रखना चाहिये ।

●

सदा सावधान रहना चाहिये

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक राजा था, वह बड़ा पवित्र था और धार्मिक भी था । साधु महात्मा की सेवा आदर करता था । वह पांडवो का वंशज था । उस राजा का नाम परीक्षित था । राजा परीक्षित की चारो तरफ जय जयकार होती थी । ऋषि-मुनि, ब्राह्मण, तथा प्रजा सभी उन्हें आशीर्वाद देते थे । उनके सदाचरण से कोई उनके विषय में खराब विचार भी नहीं करते थे । ऐसे पवित्र राजा थे ।

परंतु दुर्घटना के लिये आमंत्रण की आवश्यकता नहीं होती । कभी भी हो सकती है । राजा परीक्षित ने कलियुग को धर्म का पैर काटने से रोका । उसे बन्दी बनादिया । इसलिये कलियुग अनुनय-विनय करने लगा । हमें रहने की जगह दीजिये । मैं किसी को परेसान नहीं करुँगा । राजा परीक्षित उसे चार स्थान पर रहने की आज्ञा की (१) जहाँ जूआ खेला जाता हो, (२) जहाँ मद्यपान किया जाता हो, (३) जहाँ निर्दोष प्राणियों की हिंसा होती हो, (४) जहां विलास और वासना का परिबल हो । इन चार स्थानो को प्राप्त करने के बाद भी वह असंतुष्ट रहा । पुनः निवेदन किया कि कोई एक स्थान और दीजिये । तुम कहो कहाँ रहना चाहते हो ? सोने में (सुवर्ण में) रहने की आज्ञा दीजिये ।

''दुर्जन व्यक्ति की मांग विना विचारे पूर्ण नहीं करना चाहिये, इसके लिये अवश्य किसी महान व्यक्ति की सलाह लेनी चाहिये'' । लेकिन परीक्षित ने कलियुग की वह मांग भी पूर्ण कर दी ।

इसका परिणाम बहुत खराब आया । राजा परीक्षित स्वयं अपने माथे पर आफत का पोटला बांधलिये । कलियुग इस वात का लक्ष्य रखकर परीक्षित से बदला लेने के लिये तैयार होगया । आज नहीं तो कल परीक्षित सुवर्ण धारण तो करेंगे, तब इन्हें मैं गलत मार्ग पर ले जाऊँगा । एक दिन राजा परीक्षित हीराजडित सुवर्ण मुकुट को धारण करलिये । यह मुकुट उनके दादा भीम जरासंधका बधकरके लाये थे । भगवान श्रीकृष्ण ने कहा था कि यह राक्षस का मुकुट है इसे कभी धारण नहीं करना। यद्यपि परीक्षित भी इस वात को जानते थे, लेकिन संयोग को कौन जानता है । उस मुकुट को निकालकर ज्यौंहि मस्तक पर धारण करते हैं, अवसर देखकर कलियुग उनके मस्तक पर सवार हो जाता है । उस समय परीक्षित घोड़े पर सवार होकर वन में घूमने निकलते हैं । घूमते-घूमते वे बहुत दूर निकल जाते हैं । प्यास लगती हैं । नजदीक में कोई जलाशय नहीं दिखाई दिया, लेकिन कुछ दूर पर एक ध्वज लहराता दिखाई दिया । वहाँ वे पहुँच गये, देखा तो यह शमिक ऋषि का आश्रम है । अब इधर कलियुग ने अवसर का लाभ ले ही लिया । परीक्षित के विचार में परिवर्तन लाया । आश्रम में कोई नहीं था । शिष्य तथा शमिक ऋषि के पुत्र स्नान करने गये थे । भीतर जाकर पर्णकुटी में देखा तो शमिक ऋषि समाधिमें बैठे हुये थे । राजा उन्हे प्रणाम किये लेकिन समाधिमें बैठे हुये ऋषि को कुछ बाह्य जगत का ख्याल नहीं था । इसलिये राजा का सन्मान नहीं कर सके । परीक्षित के मस्तिष्क पर बैठा कलियुग उन्हे गलत विचार की प्रेरणा दिया देखो तो

सही यह कितना ढोगी है, आंख बंद करके बैठा है ।बोलता नहीं है। मैं कब से इसके सामने खड़ा हूँ। मेरा स्वागत नहीं किया । तुम्हे प्रणाम नहीं करना चाहिये था । जितना अपमान किया जाय वही ठीक। मस्तक पर कलियुग का जब निवास होता है तभी साधु महारात्माओ के अपमान का विचार आता है। शमिक ऋषि तो समाधिमें मग्न थे। उन्हें कोई ख्याल नहीं था । कौन आया है । फिर भी कलियुग के प्रभाव से राजा की बुद्धि भ्रष्ट होगयी और वह महात्मा का अपमान करने के लिये आश्रम से मरे हुये सर्प को लाकर ऋषि के गले में डाल दिया । बाद में वहाँ से निकल गया। अब इसका परिणाम कितना भयंकर होता है।

शमिक ऋषि के पुत्र तथा ऋषि स्नान करके आते हैं तो देखा कि मेरे पिता के गले में कोई मरा हुआ सर्प डाल दिया है। शमिक ऋषि के पुत्र श्रृंगी ऋषि से यह सहन नहीं हुआ इसलिये वे अपने कमंडलु में से जल लेकर संकल्प किये कि जिसने मेरे पिता के मस्तक में मरा हुआ सर्प डाला है उसे तक्षक नाग आज से सातवें दिन डंस लेगा। इस प्रकार के संकल्प से धरती डगमगा गयी। शमिक ऋषि समाधिसे जग गये और समाधिमें सबकुछ जान लिये।

पुत्र से कहने लगे कि बेटा ! तुमने यह क्या किया। तुम्हे यह खबर नहीं यह श्राम किसे दिया है। बड़े धर्मज्ञ-पवित्र राजा हैं। मेरे अपमान में उनका कोई दोष नहीं है। कलियुग अपना बदला लेने के लिये ऐसा किया है। क्षमा कीजिये पिताजी, मुझसे यह अपमान सहन नहीं हुआ । आपका अपमान करने वाले को अवश्य दंड मिलेगा। मैं आपका पुत्र हूँ। इसलिये यह सहन नहीं हो सका। मैंने अपने धर्म का पालन किया है। जो भी मुझे दंड देना चाहें दे सकते हैं। अंत में राजा परीक्षित का सातवें दिन सर्प दंश से मृत्यु हुई।

यद्यपि यह कथा अति प्राचीन है। श्रीमद् भागवत की है ।फिर भी हम सभी के लिये उपयोगी है -

पितानुं अपमान सहन करी ले ते साचो पुत्र नहिं ।
पतिनुं अपमान सहन करी ले ते साची पत्नी नहीं ।
गुरुनुं अपमान सहन करी ले ते साचो शिष्य नहीं ।
इष्टदेवनुं अपमान सहन करी ले ते साचो भक्त नहिं ।
राष्ट्रनुं अपमान सहन करी ले ते साचो नागरिक नहीं ।

इसलिये अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि -

''जे सत्संग नो द्रोही होय अने परमेश्वरनुं ने मोटा संतनुं घसातुं बोलता होय तेनी आगण तो मान राखवुं ते ज सारु छे अने ते घसातु बोले त्यारे तीखाबाण जेवुं वचन मारवुं पण विमुखनी आगळ तो निर्मानी थवुं नहि। तेज रुडुं छे।'' (वचनामृत पंचाळानुं पाचमुं)

समस्त सत्संग की जानकारी के लिये

समस्त सत्संग को ज्ञातव्य है कि श्री स्वामिनारायण मंदिर (हवेली) अमदावाद की वर्तमान में बालासिनोर बहनों के मंदिर में सुरतवाली सांख्ययोगी रंजबहन, सांख्ययोगी रेखाबहन, सांख्ययोगी अस्मिताबहन, सांख्ययोगी रसीलाबहन तथा प्रांतीज के बहेनों के मंदिर में रहनेवाली सांख्ययोगी भक्तिबा, सांख्ययोगी अनीताबा ये छ सांख्ययोगी बहने संप्रदाय की मर्यादा में रहती नहीं थी, तथा भगवान के बताये मार्ग पर नहीं चलती थीं, मनमाना वर्तन करती थी, इसके अलांवा महिलाओं के साथ झगड़ा करती रहती थी। अपने अहं को संतुष्ट करने के लिये संप्रदाय के नियम का उल्लंधन करती थी। इसलिये उपरोक्त छ सांख्ययोगी बहनों को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. गादीवालाजी की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव देश से बहिस्कृत किया जाता है। यह सभी सत्संगी को जानकारी के लिये लिखा जा रहा है। इन उपरोक्त सांख्ययोगी बहनो को श्री नरनारायणदेश के किसी भी मंदिर में आश्रय न दिया जाय।

कोठारी स्वामी, श्री स्वामिनारायण मंदि, कालुपुर, अमदावाद

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजीके आशीर्वचन में से
"सच्ची प्यास कब तक"

संकलन - कोटक वर्षा नटवरलाल

परमात्मा में प्रेम करना या धर्म का पालन करना यह जबरदस्ती संभव नहीं है। यह स्वैच्छिक विचार की वात है। अध्यात्म में आगे बढने की इच्छा होनी चाहिये। परमात्मा को प्राप्त करने की आन्तरिक चाहना आवश्यक है। जिसे घरका काम करना हो वह क्या करती है। बालकको बहुत सारे खिलौने देकर काम में लग जाती हैं। बालक उन खिलौने से खेलने लगता है। लेकिन बालक मां के विना अधिक समय तक नहीं रुक सकता। थोड़ी देर में ही वहमां की याद करके रोने लगता है। माता का वियोग लंबे समय तक बच्चे के लिये संभव नहीं है। जब बालक रोता है तो मां अपना काम छोड़कर दौड़ते आती है। इसी तरह हमारा प्रेम परमात्मा के लिये इतना अधिक होना चाहिये कि परमात्मा दौड़कर आवें। आते भी हैं। प्रहलाद, ध्रुव, गज इत्यादि ने प्रेम से पुकारा और प्रभु दौड़कर आगये। कुछ बालक झूठा रोते है, वे मां के प्रेम के लिये नहीं रोते कुछ खिलौने के लिये रोते हैं। लेकिन यह सब परमात्मा के पास नहीं चलेगा। जब तक खिलौने की चाकचिक्य से भरी दुनिया में मन रहेगा तब तक परमात्मा का प्रेम पाना बड़ा कठिन है। परमात्मा का प्रेम पाना हो तो संसार के चकमक से दूर होना पडेगा। अन्यथा यह भी जीवन भटकने में अन्यजीवन की तरह बीत जायेगा। परमात्मा की चाहना अन्दर से होनी चाहिये। जब प्रभु की याद करें उस समय आनंद के आंसू बहने लगे, गला रुंधजाय, शरीर पुलकायमान हो जाय तब समझना चाहिये कि आपका प्रेम प्रभु के प्रति सच्चा प्रेम है। आपके भीतर जब तक अहंकार है तब तक यह क्रिया संभव नहीं है। अन्तर्नाद की प्रार्थना आवश्यक है। अन्तर्नाद की प्रार्थना तब तक नहीं होगी जब तक - काम, क्रोध, लोभ मोह माया का जाल दूर नहीं होगा। यह उस तरह है जैसे - एक बादशाह था, जिस हौज के पानी से स्नान करता था, उसमें दुर्गन्धआने लगी। वह नौंकरो से साफ करवाया, फिर भी दुर्गन्धआती रही। पुनः साफ करवाया। इस तरह अनेकों बार करने पर दुर्गन्धगयी नहीं। बाद में ख्याल आया कि उस हौज के ऊपर भाग के एक गौखे में कुत्ते का बच्चा मर गया है, उसे निकलवा कर साफ कराने के बाद सुगन्धित द्रव्य का छिड़काव किया गया, फिर दुर्गन्धनहीं आयी। इसी तरह हमारे शरीर में काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया रुपी दुर्गन्धबैठे है जब तक इनकी सफाई नहीं की जायेगी तब तक ईश्वर रुपी सुगन्धकी प्राप्ति संभव नहीं है। इन दुर्गुणों को दूर करने के लिये सत्संग की आवश्यकता है। जिस तरह वरसात के विना धरती सुखी रहती है उसी तरह सत्संग के विना जीव सूखा रहता है। परमात्मा की प्राप्ति के लिये अन्तःकरण की शुद्धि परमावश्यक है। इसके लिये निर्दोष सत्संग करना चाहिये।

भक्तिसुधा

•

करुणानिधान की करुणा

- सां.यो. कोकिलाबहन (सुरेन्द्रनगर)

जीव बड़ा स्वार्थी होता है। जब तक परमात्मा जीव को इच्छानुसार वस्तु की प्राप्ति कराते है तब तक भगवान में प्रेम करता है। जब दुःख आता है तो प्रायः लोग भगवान की भजन भक्ति बन्द कर देते हैं ऊपर से कोसने लगते हैं। कहते भी हैं कि देखो मैं पहले इतनी भजन भक्ति करता रहा, भगवान मेरी रक्षा कहां किये। ऐसा विचार करनेवाले अपना मोक्ष विगाड़ते हैं। लेकिन सत्पुरुष व्यक्ति शास्त्रो का अनुशरण करते हैं, सन्त समामग करते हैं, सत्संग करते हैं। भक्ति-भजन करने से मानसिक शांति मिलती है, सुख की प्राप्ति होती है। कितने लोग इस जगत में सुख-सुविधा प्राप्ति के लिये भजन भक्ति करते हैं। इसमें भी भगवान उसकी रक्षा तो करते ही हैं। भगवान कभी-कभी अपने भक्तों की परीक्षा लेते हैं। सहायता भी करते हैं। भक्त का दुःख देखकर भगवान से रहा नहीं जाता वे दौड़कर आजाते हैं। परमात्मा का स्वभाव दयालु है।

सौराष्ट्र में कमढिया नामक गाँव है। इस गाँव में एकवार श्रीजी महाराज पधारे थे। एक पीपल वृक्ष के नीचे

बैठे थे । उसी समय वहाँ से कायाभाई नामक एक मुसलमान निकला । यद्यपि वह बहुत क्रोधी था । उसे कोई बुलाता नहीं था फिर भी महाराज उसे पूर्व का मुमुक्षु समझकर नाम लेकर पुकारे, वह नाम सुनते ही महाराज के पास आया ।

महाराज उसे अच्छी-अच्छी वाते सुनाये । ज्ञान की वात सुनकर कायाबाई के हृदय में परिवर्तन होगया । महाराज के पास बैठकर आनंद का अनुभव करने लगा, और कहा कि महाराज मैं आपका धर्म पालन करुँगा । आपका शिष्य बनना है मुझे । महाराज उसे कंठी बांधकर अपना शिष्य बनाये और गढपुर अपने साथ लेकर आये । कायाभाई सत्संगी होकर भजन-भक्ति करने लगे । लेकिन उनके सगे सम्बन्धी को यह अच्छा नहीं लगा । द्वेषी मुसलमान कहने लगे कि कायाभाई हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिये हैं । घर में स्वामिनारायण का मंदिर बनाये हैं, सायंकाल सभी को एकत्रित करके स्वामिनारायण का भजन करवाते हैं । इसके लिये कुछ उपाय करना होगा जिससे हिन्दू धर्म छोड़ दें । इस प्रकार की वात राजा के यहां की गयी, राजा उसे बुलाकर कहे कि तूं अपना धर्म स्वीकार करले । यह सुनकर कायाभाईने कहा कि जब से मैं स्वामिनारायण धर्म स्वीकार किया तब से मैं प्रत्येक ढंग से सुखी हूँ । अनेकों प्रकार से सुधारा भी हुआ है । इसलिये सत्संग नहीं छोडूंगा । यह सुनकर राजा ने कहा इसे प्रतिदिन धूप में बैठाओ । अपने-आप धर्म छोड़देगा । सिपाहियो ने धूपमें बैठाया तो कायाभाई स्वामिनारायण मंत्र का जाप करने लगे । भगवान भक्त का दुःख सहन नहीं कर सके । इसलिये भगवानने भक्त की रक्षा के लिये राजा के पेट में भयंकर पीडा़ उत्पन्न कर दिया । वैद्यजी को बुलाया गया, वे नाना विधउपचार किये, कोई फायदा नहीं हुआ । वैद्यजीने कहा इनके पेट में कोई तकलीफ नहीं है । बाहर आये तो धूप में बैठे व्यक्ति से पूछे कि यहाँ आप क्यों बैठे हो कायाभाईने वैद्यजी से सभी वाते वताई, वैद्यजी पुनः वापस जाकर कहे कि इन्हें पेट में पीड़ा केवल निर्दोष व्यक्ति को दंड देने से है । उन्हें छोड़दिया जाय । ऐसा ही किया गया । ज्योंहि छोडे कि तुरंत राजाकी पीड़ा खत्म हो गयी ।

इस तरह महाराज अपने भक्तों की रक्षा करते थे । भगवान की अनन्य भक्ति करने से भगवान रक्षा करने आते हैं । इसी तरह हम भी भगवान की अनन्य भक्ति करेंगे तो प्रभु हमारी रक्षा करने अवश्य आयेंगे -

दुःख हरिजननुं दीले धरो छो,
सुखनिधिश्याम सहायता करो छो ।
तदपि भजन जे करे न भावे,
नहि नरजाति कुमति तेह कहावे ॥

इसलिये करुणानिधिके करुणा का कोई पार नहीं है ।

•

भगवान तथा भगवान के एकांतिक संत तथा भक्त से कठिन प्रारब्धटल जाता है

- कोमलबहन गुरु सां.यो. जयश्रीबहन (गढडा)

एकवार गोपालानंद स्वामी गढडा से बोटाद भीमनाथ महादेव का दर्शन करने गये । वहाँ दर्शन करके साथ में कुछ भोजन सामग्री भी वहाँ के महंत से लिये और बगल के गाँव झाझर में पधारे । वहाँ के दरबार खोडाभाई आकर स्वामी को प्रणाम किये और कहे कि रसोईकी व्यवस्था मैं कर देता हूँ । स्वामीने कहा मैं भीमनाथ दर्शन करके वहाँ के महंतसे पिसान लेकर आया हूं, आप दाल की व्यवस्था कर दीजिये । दरबार थोड़ा गरीब थे तीस संतो की व्यवस्था करना कठिन था । वे अपनी तलवार लेकर दुकान में गये और कहे कि यह तलवार आप ले लीजिये हमे इसका मूल्य दे दीजिये, यदि मैं एक महीने में इसका पैसा न वापस कर सकूं तो यह तलवार आपकी । उस तलवार के तीन रुपये मिले । जिससे दाल, घी, गुण लेकर मंदिर आये । सभी सामान लाकर पुरुषानंद स्वामी को देदिये । एक साथ तीस संतो की रसोई तैयार हुई । सभी भोजन का प्रसाद लेकर सायंकालीन कृत्य के बाद जप करने बैठे तो गोपालानंद स्वामी ने कहा कि आप सभी पचीस-पचीस माला फेरियेगा । यह सुनकर शुक स्वामी ने कहा हे स्वामी ! यह माला किसके लिये । तब स्वामी ने बताया कि जब महाराज वनविचरण कर रहे थे उस समय वन में सेवकराम मिले थे । वे साधु थे पैसे भी उनके पास थे, महाराज से सेवा करवाये लेकिन खाने को नहीं दिये, इस लिये इस जन्म में

पैसे से कमजोर है। आप सभी संत आज महाराज की इच्छा से यहाँ आये हैं इसलिये माला फेरने से इनका जोभी खाये है उसका फल अच्छा मिलेगा। उस समय से खोडाभाई दरबार सुखी होगये। इस तरह जो भी भगवान के भक्त की या संत की सेवा करता है वह सुखी होजाता है।

•

महाराज मदद करो

- सां.यो. अल्पाबहन गुरु शिल्पाबहन

दैवी आत्मा सत्पुरुषों के साहचर्य से तथा शास्त्रों के श्रवण करने से सुखी होती है। सभी सुख के दाता श्रीहरि हैं। भक्ति करने से प्रभु का धाम मिलता है। इस लोक में भी सुख की प्राप्ति होती है। इस भावना से भक्ति करने वाले बहुत लोग हैं। भगवान के भक्तों को दुःख नहीं आता। भक्त की रक्षा भगवान स्वयं करते हैं। इसका उदाहरण मोरबी के मारुचारण हैं। मारुचारण ब्रह्मानंद स्वामी के साहचर्य से सत्संगी होगये। मारु चारण जाति में देदल भक्त प्रतिदिन पूजा-पाठ, नीति-नियम में रहकर भजन भक्ति करते थे। बड़े नीतिमान थे, सज्जन थे इसलिये दुष्टों की युक्ति उनपर नहीं चलती थी।

कुछ दुष्ट स्वभाव वाले उन्हें लालच में फसाना चाहते थे। इसलिये उनसे कहे कि आप स्वामिनारायण की कंठी तोड़ दीजिये हम आपको एक गाँव तथा दश हजार रुपये देंगे। लेकिन देदल भक्त इस लालच में नहीं आये और कहे कि मैं जैसा हूँ ठीक हूँ। स्वामिनारायण का आश्रय मेरे लिये श्रेष्ठ है, यही मेरा जीवन है।

प्रत्येक व्यक्ति का अपना स्वभाव होता है। जब उसके अनुकूल नहीं होता तब वह गुस्से में आजाता है। लेकिन भगवान के भक्त में एकमात्र प्रभु की चाहना रहती है जिससे वह सदा प्रभु का स्मरण करते हुये उत्तरोत्तर आगे बढता रहता है। भक्तवत्सल प्रभु भक्त के दुःख को तुरंत दूर करते हैं।

"दुःख हरिजन नु दिले धरो छो।
सुखनिधिश्याम सहायता करो छो ॥"

हिंमत जोई हरिजन नी, हरि रहे छे हाजरा हजूर
भांगे मने भक्ति केर, तेथी श्रीहरि रहे छे दूर।

इस उक्ति के अनुसार भगवानने राजा को स्वप्न दिखाया कि देदल भक्त को किसी तरह की पीड़ा न हो यह ध्यान रखकर अपनी गाड़ी में बैठाकर वहाँ से मुक्त करो। देदल भक्त ने समझ लिया कि भगवान के सिवाय कौन सहायता कर सकता है। यह भाव आते ही आगे की पंक्ति बोलते हैं।

मदद करो ने महाराज
हवे असाजी मदद करोने महाराज
गोपीनाथ ! मदद करो रे महाराज..... टेक
कंठी असाजी बांधी तो कारण
रुठो, रवाजीराज गोपीनाथ......
अधम उद्धारण पतित पावन,
बांय ग्रहेजी लाल गोपीनाथ.....
पार सपर से लोहरीये तो
लोहजी वेंदी लाज ! गोपीनाथ......
देदल ये दुःख दूर कर्या ते
मोड रीजियो महाराज, गोपीनाथ.......

मोडजी बापू वार्षिक ५०० रुपये, अन्न, वस्त्र, गाय, बैल, घोडा इत्यादि देकर राजा कविको अपने यहाँ स्थायी कर दिये।

इसके बाद श्रीहरिने रवाजी ठाकोर को दर्शन देकर उनके अज्ञान को दूर कर दिया। बाद में रवाजी ठाकुर कविराज को अपने पास बुलाकर संमान के साथ रखा -

गाम दाम थी वह गण्यो, देदल तोड़ो दल,
कंठी कारण कोपियो, राजा वे खमल।
हरिकारण हद पार हुवो, कंठी तोड़न काज,
सुपने सहजानंद कहे, भूत ग्रही ले भज।
प्रभाते कवि प्रेम थी, देदल भक्त दहीवाण,
समर्यो सहजानंद शरण, भूप मोड कुलभाण।
सहजानंदनी सोन थी, रीजियो फिर खमाल,
देदल भक्त ने दन दई, पास राख्यो प्रतिपाल।

अनन्य भक्त देदल भक्त की दृढता देखकर श्रीहरिने तत्काल सहायता की। इस तरह जो भी अपना धर्म नहीं

छोड़ता उसकी रक्षा प्रभु स्वयं करते हैं। टेक रखने वाले के लिये प्रभुने साथ दिया जिससे मोडबी दरबार तथा रवाजी ठाकोर अपने यहाँ संमान के साथ कविराज को रखे।

•

संत समागम

- निमिषा के. (मेथाण)

इस संसार रुपी समुद्र में अपनी नाव पार करने के लिये भक्तिरुपी पतवार जरुरी है। इस पतवार को चलाने के लिये अनपे इष्टदेव भगवान स्वामिनरायण शिखाकर गये हैं। आज नाविक संत है। ये संत हमें अगाधसंसार रुपी सागर से पार कर सकते हैं।

अपने संप्रदाय में इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने संतो को भेंट में देकर बड़ा उपकार किया है। संतो का एकमात्र ध्येय है भक्ति करना तथा भक्ति कराना। हम सभी धर्मकुल आश्रित संतो का साहचर्य करे, इसी में सभी का कल्याण है। महानपुरुषों के संपर्क से जीवन में अज्ञानरुपी अंधकार नष्ट होजाता है। भक्तिरुपी प्रकाश का उदय होने लगता है।

एक उदाहरण है - एक गाँव में चार चोर रहते थे। वे राजा के महल में चोरी करने जा रहे थे। उसमें से एक चोर के पैर में कांटा धंस गया। वह कहने लगा कि अब आगे मैं नहीं चल सकता। दूसरों ने कहा तूं यहीं बैठा रह। लेकिन राजा के खजाने में से तुम्हारा भाग नही रहेगा। वह चोर निराश होगया। इतने में उसे कहीं से आवाज सुनाई दी। उसने विचार किया कि नजदीक में ही कहीं कुछ हो रहा है। वहीं पर मेरी रात वीत जायेगी। धीरे-धीरे वह वहाँ पहुँच गया, जहाँ पर संत कथा कर रहे थे। वहीं बैठकर वहभी कथा सुनने लगा। कथा पूर्ण होने पर सभी अपने घर चले गये, लेकिन वह चोर वहीं बैठा रहा। संत से कहा कि मेरे पैर में कांटा चुभ गया है, मैं चल नही पा रहा हूँ, आजरात मैं यहीं सोना चाहता हूँ। प्रातः होते हम चले जायेंगे। संत दयालु थे। उन्होंने सोने की आज्ञा दे दी। सुबह होते ही वह चला गया।

दूसरी तरफ ऐसा हुआ कि राजा के महल में चोरी हुई है, इसकी जांच होने लगी। वे चोर पकड़ लिये गये। राजाने आदेश दिया कि इन्हे शूली पर चढा दो। संयोग वश जिसे कांटा धंसा था वह भी उसमें था। उसने कहा कि राजन मैं चोरी में नहीं था। मैं आश्रम में संत के पास था। लेकिन राजा किसी तरह भी मानने को तैयार नहीं। संयोगवश यह वात संत के पास गयी संत आकर कहने लगे राजन्। यह व्यक्ति रात में मेरे पास आश्रम में सोया था। संत की बात सत्य समझ कर राजाने उसे शूली पर नहीं चढने दिया, बाकी तीन को शूली पर चढा दिया गया। यही संत समामग का फल है। इसी तरह जो भी संत के साथ अपना जीवन पावन करे, सत्संग करें उसके जीवन में कितना फायदा होगा यह इस उदाहरण से समझ में आगया होगा।

एक पापी जीव था, जिसे यमराज यमपुरी में लेगये। उससे कहने लगे कि तुम्हारा बहुत पाप है। एक घड़ी का ही पुण्य है। उस पुण्य के लिये जैसा तूं कह वैसा करुँगा। उस पापी जीव ने कहा हमे एक घड़ी के लिये महात्मा के आश्रम में भेंज दीजिये। यमराजा उसे महात्मा के आश्रम में भेंज दिये। वह जीव महात्मा के आश्रम में जाकर महात्मा से अनुनय-विनय करने लगा कि मेरी एकघड़ी पूरी होजायेगी और मुझे यमराजा यमपुरी लेजायेगे। यह सुनकर महात्मा ने कहा कि अब यमराज तुम्हारा बालवांका भी नहीं कर सकते। कारण यह कि तूं मेरा आश्रित है। अभी आरती होने वाली है। आरती में भगवान आने वाले हैं। आरती के बाद मैं संकल्प लेकर तेरे ऊपर पानी छिड़कूंगा बाद में तूं भगवान का हो जायेगा। भगवान के आश्रित होने पर यमराज कुछ भी नहीं कर सकते। आरती के बाद भगवान आये उधर यमराज भी आ गये। यमराज उस जीव को लेने के लिये ज्योंही आगे बढे, तुरंत भगवानने उन्हें रोक कर कहा यह मेरा आश्रित है, इसे आप स्पर्श भी नहीं कर सकते। यमराज वापस चले गये। भक्तों! एक घड़ी संत के साहचर्य का फल आपलोग देख लिये। जब मनुष्य सम्पूर्ण जीवन संत समागम करे तो क्या होगा? यह विचार करने लायक है। इसी में कल्याण है।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से श्री ईश्वरभाई प्रभुदास पटेल (कुंडालवाला-मुंबई) की तरफ से श्रीहरि की प्रसन्नता के लिये ता. ३०-४-१० से ता. ६-५-१० तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ था तथा संहिता पाठ स्वा. धर्मजीवनदासजीने किया था । यजमान परिवार इसका दिव्य लाभ लिया था । कथा के प्रारंभ में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर व्यास पूजन करके आरती उतारे थे ।

ता. ६-५-१० को कथा की पूर्णाहुति प.पू. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में हुई थी । इस प्रसंग पर पू. महंत स्वामी तथा विद्वान संतो ने प्रेरक प्रवचन किया था । प.पू. बड़े महाराजश्री ने यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । यजमान परिवार धर्मकुल का पूजन-अर्चन करके धन्य भागी बना था । - शा. दिव्यप्रकाशदास

नारायणघाट मंदिर में अधिक मास में श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उपलक्ष्य में रात्रि के समय सप्ताह पारायण का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं नारायणघाट मंदिर के दोनो महंत स्वामी के मार्गदर्शन में नारायणघाट मंदिर के प्रांगण में ता. ८-५-१० से ता. १४-५-१० तक दंढाव्यदेश के लीला चरित्र का रात्रीय सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया था।

दोनो महंतो ने भक्तों को मात्र महाराज के चरित्रों का श्रवण हो ऐसा सुंदर आयोजन किया था । जिसके वक्ता स्वा. रामकृष्णदासजी थे । इस कथा में हरिभक्तों की संख्या खूब रहती थी । प्रत्येक दिन कथा के अलग-अलग यजमान थे । कथा श्रवण के बाद अल्पाहार की भी व्यवस्था की गयी थी । आगामी उत्सव श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन महोत्सव के लिये नारायणघाट, राणीप तथा नवा वाडज के संत हरिभक्त एक साथ मिलकर छठे, सातवे तथा अठवें वंशज की रजततुला विधिका आयोजन किये हैं । जिस में राणीप तथा नवावाडज के कई भक्त एक साथ मिलकर इस कार्य को सफल बनाये थे । नारायणघाट में पारायण के समय ६५ से ७० कि. चांदी तथा बड़े महाराजश्री का संकल्प ठाकुरजी की सुवर्णतुलाविधिका कुछ हरिभक्तो ने अलभ्य लाभ लिया था । इस सप्ताह पारायण के समय प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । संतो में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, ब्र. राजेश्वरानदंजी इत्यादि संत पधारकर शोभा में अभिवृद्धि किये थे ।

- शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदास - कोटेश्वर गुरुकुल

प्रसादीभूत कुंडाल गाँव में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का आयोजन

इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट के दोनो महंत की प्रेरणा से भगवान स्वामिनारायण के दिव्य चरित्रों से अंकित तथा स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने भक्त चिंतामणी में १७३ वे प्रकरण में जिसका उल्लेख किया है ऐसे भक्तराज कला भगत की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि कुंडाल में पवित्र पुरुषोत्तम मास में श्री हीराभाई तुलसीदास पटेल तथा श्रीमती शांताबहन हीराभाई पटेल के शुभ संकल्प से तथा उनके सुपुत्र श्री गोविंदभाई हीराभाई पटेल परिवार यजमान पद का लाभ लेकर ता. २९-४-१० से ता. ५-४-१० तक श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किये थे । इस कथा के वक्ता शा.स्वा. रामकृष्णदासजी थे । इस दिव्य प्रसंग को देदीप्यमान करने के लिये पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी कालूपुर मंदिर से पधारे थे ।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. गादीवालाजी पधारकर भक्तों को आशीर्वाद दी थी । - शा. अभयप्रकाशदास

बालासिनोर में शिबिर

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा भंडारी स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से बालासिनोर गाँव में भव्य मिलन समारंभ का आयोजन किया गया था । इस शिबिर में १३५ गाँव के हरिभक्त लाभ लिये थे । जिस में ९ ब्लड

डोनेशन केम्प, व्यसन मुक्ति कार्यक्रम तथा अन्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया था । अहमदाबाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी नारायणघाट से छोटे पी.पी. स्वाममी, वडनगर से शा. नारायणवल्लभदास इत्यादि संत पधारे थे । सभी संतोने धर्मकुल की महिमा तथा श्री नरनारायणदेव में एक निष्ठा रखने की रटन की थी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

इस प्रसंग पर बालासिनोर, लूणावाडा, कोठंबा, कपडवंज, रनेला, संतरामपुर तथा अगल बगल के गाँवो के हरिभक्त सेवा में उदाहरण रुप बने थे । इस प्रसंग पर बहनों को दर्शन का सुख देने के लिये प.पू. गादीवालाजी पधारी थी । जिस के निवास की व्यवस्थां काछिया भावेशभाई के यहाँ की गयी थी तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के रहने की व्यवस्था श्री रविशंकर पूंजालालजीके यहाँ की गयी थी । प्रत्येक हरिभक्तों ने सुंदर सेवा का लाभ लिया था ।

– राकेशभाई तथा प्रकाशभाई काछिया

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार में अधिक मास का उत्सव तथा कुंभस्नान

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से हरिद्वार श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से अधिक मास में प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाया गया था । जिस में भागवत का चार पारायण, श्रीमद् सत्संगिजीवन, श्रीमद् सत्संगिभूषण, इत्यादि का सुंदर आयोजन किया गया था। श्रीहरि नवमी के दिन ठाकुरजी को केसरजल से स्नान करवाकर अन्नकूट का भोग लगाया गया था । अहमदाबाद नारायणपुरा के श्री रणछोडभाई पटेल की तरफ से ये सभी उत्सव मनाये गये थे । अधिक वैशाख शुक्ल-१५ के दिन श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का विशेष विधिद्वारा पूजन अर्चन किया गया था । जिसके यजमान बाबूभाई जीवाभाई तथा बचुभाई अमीन थे । जन्माष्टमी, शिवरात्री, विजया दशमी इत्यादि उत्सव भी मनाये गये थे । ता. १४-४-१० के अंतिम कुंभ स्नान प्रसंग पर श्रीहरि का अनेको हरिभक्त उपासना करके लाभ लिये थे। हरिभक्त इस कुंभ स्नान का दिव्य लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाये थे । – साधु व्रजभूषणदास – हरिद्वार

हिंमतनगर मंदिर में अधिक मास में कथा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में अधिक मास दरम्यान निष्कुलानंद स्वामी विरचित धीरजाख्यान की कथा महंत स्वामी ने बड़े रोचक ढंग से की थी । हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्तित होकर लाभ लिये थे । इस अवसर पर इडर के महंत भी संतो के साथ पधारे थे ।

– पुजारी स्वा. अजयप्रकाशदास

चेनपुर गाँव में श्रीमद् भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मवंशी की कृपा से तथा स्वामी जगतप्रकाशदासजी की प्रेरणा से चेनपुर में श्रीप्रकाशभाई पुरुषोत्तमदास पटेल के संकल्प से ता. २०-४-१० से २६-४-१० तक स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजीने श्रीमद् भागवत की सुमधुर शैलीमें कथा की थी । इस प्रसंग पर समस्त धर्मवंश पधारकर भक्तों को धन्यभागी बनाया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री अपने आशीर्वाद में बताये कि इस गाँव में मंदिर बने तथा लोग सत्संगी बनकर नीति-नियम का पालन करें । यजमान परिवार सेवा का अवसर प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य बनाया था । श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये भी सेवा किये थे । – घनश्यामबाई पटेल – उवारसद

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क में अधिकमास में कथा-पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में अधिक मास दरम्यान ता. १०-५-१० से १६-५-१० तक भक्त चिंतामणि की कथा शा.स्वा. रामकृष्णदास ने की थी । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । कथा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । करीब १५०० जितने हरिभक्त कथा का लाभ लिये थे । – श्री स्वामिना. मंदिर जीवराजपार्क

माणसा मंदिर में पाटोत्सव संपन्न

यहाँ के मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ठाकुरजी का १४० वाँ पाटोत्सव वैशाख शुक्ल-६ ता. १९-५-१० को धूमधाम के साथ मनाया गया था । जिसके यजमान अ.नि. जड़ी बहन नानालाल जडसारी परिवार थे । इस प्रसंग पर जगत स्वामी तथा अयोध्या के देव स्वामी तथा यहाँ के घनश्याम स्वामी इत्यादि संतो ने प्रेरक प्रवचन किया था ।

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण म्युझियम वर्ष २०११ के उपलक्ष्य में स.गु. निष्कुलानंद स्वामी के जन्मस्थान शेखपाट में विकास महोत्सव

मूलीधाम में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री आत्मीय भावना से तथा भूतपूर्व महंत लक्ष्मीप्रसाददासजी तथा छपैयाप्रसाददासजी के सहयोग से तथा शेखपाट के संत हरिभक्तों के सहकार से विकास महोत्सव का आयोजन किया गया था । संप्रदाय के वैराग्य मूर्ति ऐसे निष्कुलानंद स्वामी हालार प्रदेश के शेखपाट गाँव में उत्पन्न हुये थे । इनके जन्म स्थान पर जगह लेकर नूतन मंदिर, धर्मशाला, गौशाला, भोजनालय इत्यादि बनाने का आयोजन किया गया। जिस में दान देने वाले श्री गिरधरलालजी तथा श्री लक्ष्मणभाई भीमजीभाई (बलदिया-कच्छ) थे ।

इस प्रसंग पर ता. १५-४-१० को ठाकुरजी का विजय स्तंभ नगरयात्रा का आयोजन किया गया था । ता. १६-४-१० को जब महाराजश्री पधारे उस समय भव्य स्वागत का आयोजन किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मंदिर में पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारे थे । भूमिपूजन में प.पू. महाराजश्री के साथ मुख्य दाता श्री गिरधरलालजी तथा श्री लक्ष्मणभाई थे । यज्ञ की पूर्णाहुति में प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ सरधारा ओधवजीभाई थे । इस प्रसंग पर चिंतामणी की कथा स्वा. चतुर्भुजदासजीने की थी ।

प्रासंगिक सभा में सभा संचालन छपैयाप्रसादने किया था। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद देते हुये बताया कि यहाँ का मंदिर शीघ्रपूर्ण हो और सभी को ठाकुरजी के सेवा का अवसर प्राप्त हो । इस प्रसंग पर मूली के लक्ष्मीप्रसाद स्वामी, महंत स्वामी, अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी के शिष्य जे.के. स्वामी चराडवा के महंत स्वामी, अनिरुद्ध स्वामी, अहमदाबाद के विश्ववल्लभ स्वामी, जामनगर के कोठारी स्वामी, तथा पंचाला के संत विशेष रुप से उपस्थित थे ।- पुजारी गिरीश भगतप्रासंगिक सभा में सभा संचालन छपैयाप्रसादने किया था । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद देते हुये बताया कि यहाँ का मंदिर शीघ्रपूर्ण हो और सभी को ठाकुरजी के सेवा का अवसर प्राप्त हो । इस प्रसंग पर मूली के लक्ष्मीप्रसाद स्वामी, महंत स्वामी, अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी के शिष्य जे.के. स्वामी चराडवा के महंत स्वामी, अनिरुद्ध स्वामी, अहमदाबाद के विश्ववल्लभ स्वामी, जामनगर के कोठारी स्वामी, तथा पंचाला के संत विशेष रुप से उपस्थित थे ।

– पुजारी गिरीश भगत

विदेश सत्संग समाचार

वोशिंग्टन (I.S.S.O.) चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से २ अप्रैल शुक्रवार सायंकाल को ७-१५ से १०-१५ तक डेइज इन के होल में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में कथा-प्रवचन, कीर्तन के साथ प.पू. बड़े महाराजश्री के छायाचित्र का पूजन अर्चन करके प्रागट्योत्सव मनाया गया था ।

१७ अप्रैल शनिवार को सायंकाल ४-४५ से ९-४५ तक सत्संग सभा हुई थी । जिस में धुन-कीर्तन, कथा-वचनामृत का पठन हुआ, बाद में ह्युस्टन मंदिर के महंत स्वामी सेलफोन द्वारा सुंदर कथा सुनाये थे। ३० अप्रैल शुक्रवार को सायंकाल ७-१५ से १०-१५ तक डेउज इन के होल में सत्संग सभा हुई थी। ठाकुरजी के समक्ष धुन-भजन-कीर्तन किया गया था। रिवोहन मंदिर से धर्मवल्लभ स्वामीने सोलफोन द्वारा अधिकमास की कथा सुनाते थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है।

– कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से रामनवमी तथा श्रीहरि जयंती का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। महंत धर्मवल्लभदासजीने श्रीरामजन्मोत्सव तथा श्रीहरि के प्रागट्योत्सव की आरती उतारी थी । सभा में श्रीहरि की लीलाओं का सुन्दर वर्णन किया गया था । (आई.एस.एस.ओ.) के प्रत्येक चेप्टर से हरिभक्त पधारे थे । हरिनंदन स्वामीने ठाकुरजी का सुंदर श्रृंगार किया था । हनुमानजी के जन्म प्रसंग पर हनुमानजी की आरती तथा हनुमान चालीसा का पाठ किया गया था ।

अधिक मास में ८ मी को महापूजा का आयोजन किया गया था । श्री पिनाकिन जानी ने महापूजा करवायी थी । इस अवसर पर सुव्रतकुमार तथा सौम्यकुमार पधारे थे । अनेक हरिभक्त इस अवसरका लाभ लिये थे । अधिक मास के निमित्त मंदिर में भक्तिनिधिकी त्रिदिनात्मक कथा धर्मवल्लभ स्वामीने की थी । कथा के मुख्य यजमान तथा सहयजमान के

वक्ताजी का पूजन अर्चन किया था । इस अवसर पर पूज्या बिन्दुराजा भी पधारी थी । महंत स्वामीने तीन दिन तक यजमानों का सन्मान किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है ।- प्रवीणभाई शाह

शिकागो इटास्का श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में श्रीहरि प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था । स्वा. हरिप्रसाददासजी तथा स्वा. जे.पी. ने झूले को सुंदर अलंकृत किया था । इस अवसर पर हरिभक्तों की खूब भीड़ थी । जेतलपुर के पूज्य पी.पी. स्वामी यहाँ पधारे थे । स्वामीने सुंदर कथा का लाभ सभी को दिया था । पू. स्वामीने सत्संग की खूब महिमा समझायी थी ।

हेल्थ क्लिनिक के लाभार्थ सोश्यल कार्यक्रम का आयोजन किया गया था ।

१ अप्रैल को प.पू. बड़े महाराजश्री का प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

अधिक पुरुषोत्तम मास में २४ अप्रैल से १ मई तक सायंकाल पू. पी.पी. स्वामी द्वारा शिक्षापत्री की कथा हुई थी । श्री नरनारायणदेव तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मवंशीकी प्रसन्नता है । – वसंत त्रिवेदी

टोरोन्टो श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O.)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री स्वामिनारायण भगवान के बताये गये नीत-नियम के अनुसार पवित्र मास में निष्कुलानंद स्वामी विरचित ''अवतार चिंतामणी'' के पारायण का आयोजन किया गया था । इसके कथा वक्ता सत्यस्वरुप स्वामी थे । दोनो प्रसंग पर बड़ी संख्या में हरिभक्त उपस्थित थे। – श्री नरनारायण युवक मंडल

बहनो के अन्तर राष्ट्रिय पंच दिनात्मक सत्संग शिबिर अगस्त ३ से ७ - २०१० शुभ स्थल श्री स्वामिनारायण मंदिर, चेरीहील, न्युजर्शी

श्रीजी महाराज द्वारा संस्थापित श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के मार्गदर्शन में बहनों की आध्यात्मिक गुरु प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी के सांनिध्य में पंच दिनात्मक सत्संग शिबिर का भव्य आयोजन ता. ३ अगस्त १० से ७ अगस्त २०१० तक किया गया था ।

पू. गादीवालाजीने सभी को बताया कि संप्रदाय की आज्ञा, अपासना, धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति दृढता पूर्वक करनी चाहिये । धर्म शिबिर की महिमा अपने श्रीमुख से समझाया था ।

सत्संग शिबिर में योग का क्लास, भजन, कीर्तन तथा धार्मिक पुस्तकों के ऊपर विवेचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, भोजन बनाने की रीति, प्रातः पूजाविधि, महेंदी लगाने की प्रतियोगिता इत्यादि का आयोजन किया गया था ।

देश विदेश से धर्म प्रेमी बहने इस पंच दिनात्मक शिबिर में पधारी थी । भोजन, भजन तथा रात्रि रहने की व्यवस्था की जायेगी जो बहन इस में भाग लेने की इच्छुक हों वे सूचना देंगी ।

(१) दक्षाबहन पटेल (शिकागो) फोन : ६३०-३२९-४०२५ E-mail : dpatel1958@gmail.com
(२) बीजलबहन पटेल (न्युजर्सी) फोन : २०१-९१६-३८८९ E-mail : patelbijal1234@gmail.com
(३) पायलबहन पटेल (साउथ न्युजर्शी) फोन : ८५६-६३०-०२०८ E-mail : payal1234@yahoo.com
(४) शिल्पाबहन पटेल (साउथ न्युजर्शी) फोन : २०१-३४१-८५६६ E-mail : shilpab1234@gmail.com
(५) फाल्गुनीबहन राठोड (सेन्ट्रल न्युजर्शी) फोन : ७३२-६६२-०८०७ E-mail : falgu1@yahoo.com

– आई.एस.एस.ओ. न्युजर्शी समस्त किशोरी तथा बहनो का विभाग

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

हरिपर (ता. धांगधा) : श्री जादवभाई भुवा की माताजी शांताबहन प्रभुभाई भुवा श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई ता. १८-४-१० को अक्षरनिवासिनी हुई है।

आदरज मोटी : श्री ठाकोर वरसंगजी चेहराजी (कोठारीश्री) ता. २८-५-१० को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

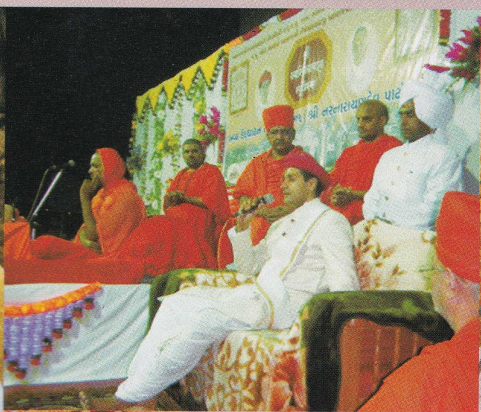

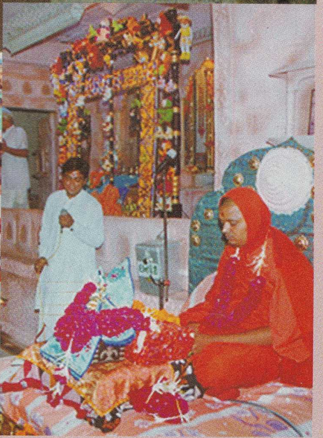

(१-२) नारायणघाट मंदिर में अधिक मास के अवसर पर अभिषेक करते हुये तथा अधिक मास में कथा प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देत हुये प.पू. महाराजश्री (३) एप्रोच (बापूनगर) मंदिर में फूल के अलंकारो से अलंकृत श्रीनाथजी के स्वरुप में श्री घनश्याम महाराज (४) स.गु. निष्कुलानंद स्वामी के जन्मस्थान शेखपाट (मूलीदेश) में नूतन मंदिर का भूमिपूजन करते हुये प.पू. महाराजश्री (५) झुलासण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री की उपस्थिति में उद्‌बोधन करते हुये पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (६) अयोध्या मंदिर में नूतन अद्यन आवास का भूमिपूजन करते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री (७) बालासिनोर में सत्संग उत्कर्ष स्नेहमिलन प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुये प.पू. महाराजश्री तथा हरिभक्त (८) अधिक मास में जीवराजपार्क मंदिर में कथा करते हुये शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल)

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/9-11
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

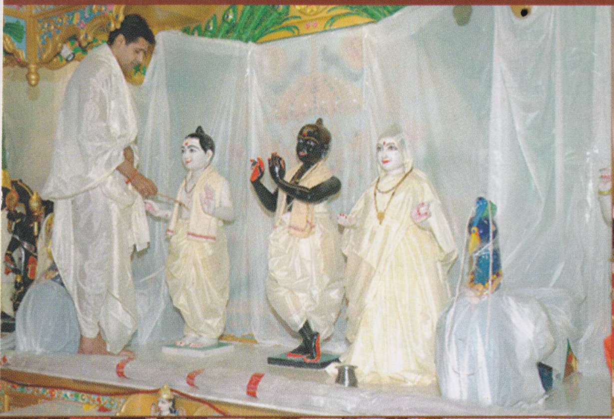

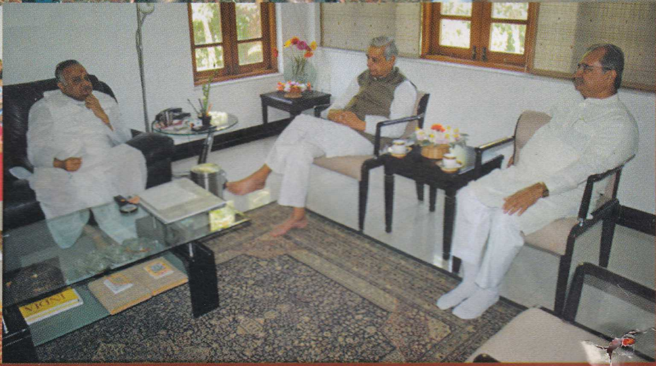

-४) कलिवलेन्ड मंदिर के द्वितीय पाटोत्सव तथा सुवर्ण कलश प्रतिष्ठा के महोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये तथा सुवर्ण कलश एवं ज दंड का पूजन करते हुये एवं सभा में दर्शन देते हुये प.पू. महाराजश्री (५) सीनेमिन्शन मंदिर में अधिक मास के अवसर पर कथा प्रसंग में समूह आरती लाभ लेते हुये हरिभक्त (६) श्री स्वामिनारायण म्युझियम का नीरीक्षण करने हेतु पधारे हुये विधान सभा के अध्यक्ष श्री अशोकभाई भट्ट तथा श्री भूपेन्द्रसिंह चूडासमा पू. बड़े महाराजश्री के साथ गोष्ठी करते हुये।

Museum Year
March 2010 - March 2011

Shree Swaminarayan Museum

ઈ.સ.૨૦૧૦-૧૧નું વર્ષ "મ્યુઝિયમ વર્ષ"

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ૧૦૦૮શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી માર્ચ ૨૦૧૧નું વર્ષ "મ્યુઝિયમ વર્ષ" તરીકે જાહેર કરવામાં આવે છે.

ઉદ્‌ઘાટન ૮મી માર્ચ ૨૦૧૧

સંવત ૨૦૬૭ ફાગણસુદ ત્રીજ શ્રી નરનારાયણ દેવનો પાટોત્સવ

www.swaminarayanmuseum.com/org

Praful Kharsani